कलाकल

2016

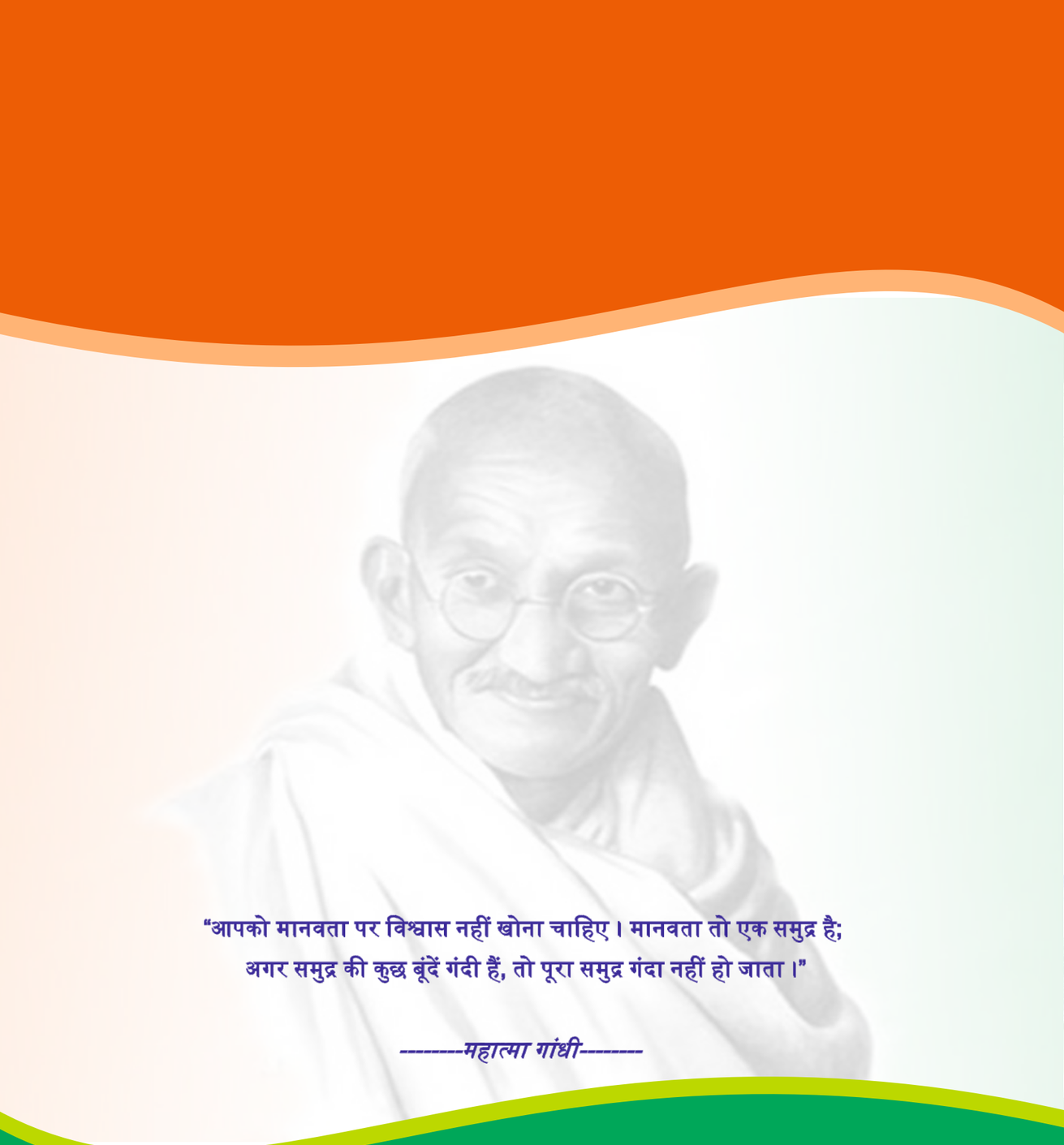

"आपको मानवता पर विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता तो एक समुद्र है;
अगर समुद्र की कुछ बूंदें गंदी हैं, तो पूरा समुद्र गंदा नहीं हो जाता।"

--------महात्मा गांधी--------

आंध्र प्रदेश भू - स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

हैदराबाद - 500039, तेलंगाना

कलाकल

वार्षिक अंक -2016

संरक्षक	श्री के.के.गुप्ता, अधीक्षक सर्वेक्षक/निदेशक (सा. क)
संपादक मंडल	ले. कर्नल सुनिल फतेहपूर, अधीक्षक सर्वेक्षक **श्री. एन. वी. स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक** श्रीमती ई.मालिनी,क.हि.अनुवादक
मुद्रण कार्य/कंप्यूटर सेटिंग/ मुख्य पृष्ठ सृजन	श्री बी.एच.राव,अधीक्षक सर्वेक्षक श्री आर.वी.रघु, सर्वेक्षण सहायक

कृपया ध्यान दें : इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं ।
यह आवश्यक नहीं कि संपादक इन विचारों एवं दावों से सहमत हो।
पत्रिका बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए ।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय /रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	संदेश	डा स्वर्ण सुब्बा राव भारत के महासर्वेक्षक	
2	संदेश	मेजर जनरल एम. मोहन अपर महासर्वेक्षक	
3	संदेश	के.के.गुप्ता निदेशक	
4	संपादक की कलम से	ले. कर्नल सुनिल फतेहपूर अधीक्षक सर्वेक्षक	
5	वर्ष 2015-16 के लिए मानदेय से पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची	लेखा एवं आहरण अनुभाग	1
6	पदोन्नत कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	2
7	स्थानांतरण पर तैनात कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	3
8	स्थानांतरित कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	4
9	सेवा निवृत्त/स्वैच्छिक सेवा निवृत्त हुए कर्मचारियों की सूची	पत्राचार अनुभाग	5
10	मनोरंजन क्लब का वार्षिकोत्सव	मनोरंजन क्लब	6
11	स्मृति-शेष	लेखा एवं आहरण अनुभाग	12
12	भू-स्थानिक जानकारी विनीयमन बिल– एक आवश्यकता	श्री के.के. गुप्ता, अधीक्षक सर्वेक्षक	13
13	सर्वेक्षण में भारतीय दिग्गजों की भूमिका	श्री रवि किरण, अधिकारी सर्वेक्षक	16
14	आधुनिक युग की भाग दौड़ की जिंदगी	श्री एन. बलराम स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक	18
15	इन्सानियत	श्री चरण दास नारायण गेडाम, अधिकारी सर्वेक्षक	20

16	खरगोश एवं कछुए की आधुनिक कहानी	श्री रवि किरण, अधिकारी सर्वेक्षक	21
17	एक मेंढक की कहानी	मास्टर पी. अभय, सुपुत्र पी.रवि किरण, सर्वेक्षक	22
18	माँ – बाप की सेवा	श्री शेख. मेहबूब पीरा,पटल चित्रक	23
19	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ	श्रीमती शैख रजिया सुलताना सुपुत्री शेक. मेहबूब पीरा,पटल चित्रक	23
20	लालच की कीमत	श्री शेख. मेहबूब पीरा,पटल चित्रक	24
21	इस्रो की उपलब्धीयाँ	श्री एम.राकेश,अधिकारी सर्वेक्षक	25
22	बाल मजबूरी	श्रीमती शैख रजिया सुलताना सुपुत्री शेक. मेहबूब पीरा,पटल चित्रक	26
23	क्या कुछ होता है हमारी दुनिया में	श्री सय्यद इद्रीस, सर्वेक्षक सहायक	27
24	भोजन करने की विधि	श्री एन. बलराम स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक	28
25	हिन्दू धर्मचक्र के कुछ नियम	श्री टी. कृष्ण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	32
26	दृढ संकल्प	श्री वी. सुरेश, पटल चित्रक	33
29	भारतीय सर्वेक्षण विभाग का विकास एवं प्रगति	श्री ओबुलेश, मानचित्रकार	34
30	भारतीय 250 सालों का भारतीय सर्वेक्षण विभाग	श्री के.वी. रमण मूर्ती, अधिकारी सर्वेक्षक	38
31	बहादुरी का पुरस्कार	श्री पाण्डव कुंटिया, सर्वेक्षक सहायक	40
32	गज़ल	श्री पेन्ड्याला श्रीनिवास, अधिकारी सर्वेक्षक	42

डॉ स्वर्ण सुब्बा राव
Dr. SWARNA SUBBA RAO
भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं0 37
देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड), भारत

SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office
Hathibarkala Estate, Post Box No-37
Dehradun-248001, (Uttarakhand), India

संदेश

यह अत्यंत गौरव की बात है कि आंध्र प्रदेश भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र प्रकाशन की निरंतरता को बनाए रखते हुए इस वर्ष भी हिंदी पत्रिका 'कलाकल' का प्रकाशन करने जा रहा है । हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से जहाँ ज्ञान की वृद्धि होती है, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से अधिकारियों को अपनी लेखन प्रतिभा को उजागर करने हेतु एक मंच भी मिलता है ।

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के शुभ अवसर पर प्रकाशित होने वाली 'कलाकल' हिंदी पत्रिका के प्रकाशन हेतु शुभ कामनाएं व्यक्त करते हुए मैं सभी रचनाकारों, परामर्शदाताओं तथा पत्रिका से जुड़े साथियों का आभार व्यक्त करता हूँ साथ ही पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

(डॉ० स्वर्ण सुब्बा राव)
भारत के महासर्वेक्षक ।

Fax: 00-91-135-2744268/2744064
Tel : 00-91-135-2744268/2747051-58 Extn. 4350

E-Mail: ss.rao.soi@gov.in
sgi.soi@gov.in

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
अपर महासर्वेक्षक का कार्यालय
ADDL. SURVEYOR GENERAL'S OFFICE
दक्षिणी क्षेत्र/ SOUTHERN ZONE
कोरमंगला, बेंगलूरू/KORAMANGALA BANGALORE

संदेश

'बोल-चाल की हिन्दी ही सही, काम शुरू तो कीजिए' की घोष का सही अनुपालन करते हुए, आं.प्र. भू.स्था. आं.केन्द्र के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को मैं हार्दिक बधाई देते हुए यह व्यक्त करता हूँ कि विभिन्न परियोजनाओं एवं अन्य सरकारी कामकाज की चाप को सहने के बावजूद उन्होंने अपना अमूल्य समय निकालकर अपने- अपने विचार व्यक्त करते हुए हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गृह पत्रिका "कलाकल" की प्रकाशन में सराहनीय योगदान दिया है। हिन्दी पत्राचार में हम लक्ष्य को प्राप्त करने के संबध में मुझे यह व्यक्त करते हुए खुशी हो रही है कि हिन्दी पत्राचार की पारदर्शिता एवं गुणवता में वृद्धि हुई है।हिन्दी में कार्य हो, इसके लिए कर्मचारियों को प्राज्ञ के अलावा पारंगत में भी प्रशिक्षण दिया गया है। आशा करता हूँ कि हिन्दी में अपने विचार व्यक्त करने की जिस सोच की छायाप्रति इस गृह पत्रिका "कलाकल" में उतारी गई है, उसी सोच से कार्यालय पत्राचार भी हिन्दी में ही होगा। मैं इस संकल्प में हर संभव मदद के लिए तैयार हूँ और आशा करता हूँ कि गृह मंत्रालय की राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य से हम काफी आगे निकल जाएं ताकि गर्व के साथ हम यह कह सकें कि हमें भी हिन्दी में अच्छी तरह काम करना आता है।

एम मोहन

मेजर जनरल एम. मोहन
अपर महासर्वेक्षक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA
निदेशक का कार्यालय
OFFICE OF THE DIRECTOR
आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र
Andhra Pradesh Geo-Spatial Data Centre
उप्पल, हैदराबाद-500 039(ते)
Uppal, Hyderabad- 500 039(T)

निदेशक महोदय की कलम से.....

हर्ष की बात है कि आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार तथा रूचि बढ़ाने हेतु वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'कलाकल ' का प्रकाशन करने जा रहा है ।

राजभाषा हिन्दी की विशेषता उसकी व्यावहारिकता है । इसी कारण से हिन्दी कार्यालयीन व व्यवहारिक हिन्दी के रूप में प्रशासनिक मामलों में उपयुक्त की जा रही है ।

इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य हिन्दी के उपयोग में अधिक वृध्दि लाना और उचित तरीके से राजभाषा हिन्दी में कार्य करने की दिशा में प्रकाशित करना है ।

पत्रिका के प्रकाशन में कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है। अपने विभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं उनके बच्चों को भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने खुले मन से अपनी सोच हमारी पत्रिका के माध्यम से व्यक्त किया है ।

आन्ध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र को तेलंगाना भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र एवं आन्ध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र में दिनांक 30 सितंबर 2016 तक विभाजित करने की योजना है । इस उपलक्ष्य में यह संस्करण, विभाजन से पूर्व की अंतिम संस्करण है ।

के.के.गु

(कल्यान कुमार गुप्ता)
अधीक्षक सर्वेक्षक
निदेशक (वर्तमान कर्तव्यभार)

संपादक की कलम से --------

हम आज आजादी की 70वीं सालगिरह मना रहे हैं। आजादी के बाद 14 सितंबर 1949 को हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होनी चाहिए, यह निर्णय भारत सरकार ने इस चीज को ध्यान में रखकर लिया था कि हमारे भारत वर्ष में विभिन्न भाषाओं की प्रचलन में मशगूल रहते हुए भी हिन्दी ही सबको अपने-अपने विचार प्रकट करते का एकमात्र साधन है। हमारा हैदराबाद 'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद, कार्यालय में हमें पूरे भारत की संस्कृति एवं भाषा का प्रचलन दिखता है और लोग उर्दू मिश्रित हिन्दी की बोल-चाल से अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। यही परिस्थिति हमारे भू- स्थानिक आंकड़ा केन्द्र में भी स्थित है। हालांकि हिन्दी का कार्यालयिन पत्राचार चाहे वह प्राशासनिक हो या तकनीकी, का लक्ष्य तो पूर्ण नहीं होता पर कोशिश जारी है और पिछले दो तीन सालों में हिन्दी पत्राचार की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। 'ग' क्षेत्र के कारण कर्मचारियों में झिझक जरूर है पर प्रोत्साहन देने पर उस हिन्दी पत्र की रूप रूखा को देख उनके चेहरे पर रौनक देखने लायक है।

इसी प्रोत्साहन के बल पर, हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस गृह पत्रिका 'कलाकल' के प्रकाशन में अपने- अपने विचारों को व्यक्त करने का जो सिलसिला जारी रखा है वह वाकई में सराहनीय है। उन सब की सोच, मेहनत से उनके व्यक्त किए हुए विचारों का संगम ही इस पत्रिका की प्रकाशन में हमें प्रोत्साहन देते रहता है। मैं संपादकीय मंडली की ओर से उन सबको इस आशा के साथ हार्दिक बधाई देता हूँ कि कलाकल का अंत नहीं होगा।

शुभकामनाओं सहित।

ले. कर्नल सुनिल एस.फतेहपूर
अधीक्षक सर्वेक्षक
मुख्य संपादक

वर्ष 2015-16 के लिए मानदेय से पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम
1	के. वी. रमणामूर्ति	अधिकारी सर्वेक्षक
2	टी. कृष्ण कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक
3	एन.वी.एस.गुप्ता	अधिकारी सर्वेक्षक
4	जे. शीला रानी	मानचित्रकार डि.I
5	डी. राम मोहन राव	सर्वेक्षण सहायक
6	बी. गोपाल राव	सर्वेक्षक
7	वी. गोपाल राव	सर्वेक्षक
8	एस.रवि	सर्वेक्षक
9	एम. श्रीनिवास	सहायक
10	पी. सतीश	सहायक
11	एम. वासुदेव	सहायक
12	एम. शैलजा रानी	आशुलिपिक
13	ई. मालिनी	कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
14	सी. साम्भासिवा राव	एम.टी.डी
15	एन.बद्दू	एम.टी.डी
16	एम. विजय कुमार	उच्च श्रेणी लिपिक
17	बी. राम कृष्णा	उच्च श्रेणी लिपिक
18	ए. शैलेश	उच्च श्रेणी लिपिक
19	एम. लक्ष्मण कुमार	उच्च श्रेणी लिपिक
20	बालाजी राठोड़	उच्च श्रेणी लिपिक
21	एम. सुवार्तय्या	खलासी
22	ओ. पीटर	खलासी
23	एम. युसुब	खलासी
24	एन.सदानन्द	खलासी
25	पी. भूलक्ष्मी	खलासी
26	जे.विजय प्रभाकर	खलासी

पदोन्नत कर्मचारियों की सूची

म सं	नाम श्री/ श्रीमती	पदनाम	पदोन्नति की तिथि	जिस पद पर पदोन्नत हुए
1	एम. भुवनेश्वरी	मा.चि. डिवीजन -I	23-09-2015	मुख्य मानचित्रकार
2	सयैद इदरीस	प.चि.ग्रेड- II	28-09-2015	सर्वेक्षण सहायक
3	डी. रवि बाबू	प.चि.ग्रेड- II	28-09-2015	सर्वेक्षण सहायक
4	सी. रामचन्द्र रेड्डी	एम.टी.डी	23-09-2015	एम.टी.डी-II
5	भीमसेन राव	मा.चि. डिवीजन -II	04-11-2015	मा.चि. डिवीजन -I
6	डी.कृष्णा राव	मा.चि. डिवीजन -II	19-11-2015	मा.चि. डिवीजन -I
7	एम. नारायण राव	मा.चि. डिवीजन -II	19-11-2015	मा.चि. डिवीजन -I
8	डी.नरसिंहा	सहायक	27-11-2015	कार्यालय अधीक्षक
9	वी राज कुमार	सहायक	30-11-2015	कार्यालय अधीक्षक
10	एन.श्रीनिवास	सर्वेक्षक	29-01-2016	अधिकारी सर्वेक्षक

स्थानांतरण पर तैनात कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				से	को
1	सयैद अहम्मद	खलासी	01.10.2015	कर्नाटका भू.स्था. आं. केंद्र, बेंगलूरू	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
2	एम. नारायण राव	कार्यालय अधीक्षक	27.11.2015 (पूर्वाह्न)	भारतीय प्रशिक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
3	वी. राजकुमार	कार्यालय अधीक्षक	30.11.2015 (अपराह्न)	भारतीय प्रशिक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
4	भीमसेन राव	मा.चि.ग्रेड-II	04.11.2015 (अपराह्न)	भौ. सू.प. एवं सु. सं. निदेशालय, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
5	डी.कृष्णा राव	मा.चि.ग्रेड-II	19.11.2015 (अपराह्न)	महा एवं गोवा जी.डी.सी. पुणे	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
6	डी.नरसिंहा	मा.चि.ग्रेड-II	19.11.2015 (अपराह्न)	महा एवं गोवा जी.डी.सी. पुणे	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
7	एस. श्रीनिवास	सर्वेक्षक	15.05.2015 (अपराह्न)	महा एवं गोवा जी.डी.सी. पुणे	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
8	पी. सेल्वराजू	दफ्तरी	05.02.2016 (पूर्वाह्न)	भौ. सू.प. एवं सु. सं. निदेशालय, हैदराबाद	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
9	शेख बिकारी	सर्वेक्षक	25.01.2016 (पूर्वाह्न)	महा एवं गोवा जी.डी.सी. पुणे	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
10	पी.के. प्रसाद	अधिकारी सर्वेक्षक	26.04.2016 (पूर्वाह्न)	छत्तीगढ जी.डी.सी, रायपूर	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
11	पी.श्रीनिवास	अधिकारी सर्वेक्षक	11.08.2016 (पूर्वाह्न)	राष्ट्रीय भू.स्था. आं. केंद्र, देहरादून	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
12	सी. साम्भसिवा राव	एम.टी.डी ग्रेड -I	01.06.2016 (पूर्वाह्न)	डी.ए.डब्ल्यु विंग, विशाखपट्टनम	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद
13	बी.चिन्ना राव	प्रवर श्रेणी लिपिक	03.06.2016 (पूर्वाह्न)	दक्षिणी मुद्रण वर्ग, हैदराबाद	डी.ए.डब्ल्यु विंग, विशाखपट्टनम

स्थानांतरित कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				से	को
1	सी. साम्भसिवा राव	एम.टी.डी ग्रेड –I	10.07.2015	आं.प्र.भू.स्था.आं. केंद्र, हैदराबाद	डी.ए.डब्ल्यु विंग, विशाखपट्टनम
2	नीलम कुमार	अभिलेखपाल ग्रेड –II	21.09.2015 (अपराह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भा. प्रशि.एवं मा. संस्थान, हैदराबाद
3	एन.अनिल कुमार	सर्वेक्षक	30.09.2015 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भा. प्रशि.एवं मा. संस्थान, हैदराबाद
4	सुमित भद्रा	सर्वेक्षक	30.09.2015 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भारतीय प्रशिक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद
5	आर.वी.वी. सत्यनारायणा	सर्वेक्षक	30.09.2015 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भारतीय प्रशिक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद
6	जे.डी. एबनेजर	मा.चि. डिवीजन –I	01.10.2015 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	दक्षिणी मुद्रण वर्ग, हैदराबाद
7	सागरिका पेताल	सर्वेक्षक	01.10.2015 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	ओडिसा भू.स्था. आं. केंद्र,भुवनेश्वर
8	आनन्द किशोर	मा.चि. डिवीजन –I	06.11.2015 (अपराह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	एम.ए.एण्ड डी सी, देहरादून
9	बी. रामाचारी	सर्वेक्षक	13.01.2016 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भौ. सू.प. एवं सु. सं. निदेशालय, हैदराबाद
10	कर्नल श्रीधर राव	सर्वेक्षक	22.01.2016 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	ए डी जी, मिल्ट्री सर्वे
11	मोहम्मद अजीमुद्दीन	अधिकारी सर्वेक्षक	29.09.2016 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भौ. सू.प. एवं सु. सं. निदेशालय, हैदराबाद
12	बी.एच.राव	अधीक्षक सर्वेक्षक	13.06.2016 (अपराह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	डी.ए.डब्ल्यु विंग, विशाखपट्टनम

13	एन. जॉन राय	प्रवर श्रेणी लिपिक	22.06.2016 (अपराह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भा. प्रशि.एवं मा. संस्थान, हैदराबाद
14	एन. भद्रु	एम.टी.डी ग्रेड –I	01.07.2016 (पूर्वाह्न)	आं. प्र. भू.स्था. आं. केंद्र, हैदराबाद	भा. प्रशि.एवं मा. संस्थान, हैदराबाद

सेवा निवृत्त/स्वैच्छिक सेवा निवृत्त हुए कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम	सेवा निवृत्ति की तिथि
1	ए.शंकरय्या	मा.चि.डी.-I	31-10-2015
2	अक्काय्या	खलासी	29-02-2016
3	टी. महाराणा	अधिकारी सर्वेक्षक	31-03-2016
4	एल. योहान	खलासी	31-03-2016
5	सत्यभामा त्रिपाठी	मुख्य मानचित्रकार	30-06-2016
6	बी. मुरलीधर	मा.चि.डी.-I	30-06-2016
7	पी.माचरला	खलासी	30-06-2016
8	सी. एच अदृष्टा	खलासी	30-06-2016
9	एम. भुवनेश्वरी	मुख्य मानचित्रकार	31-07-2016
10	टी. कृष्ण कुमार	अधिकारी सर्वेक्षक	31-08-2016
11	लोकेश कुमार फरासी	अधिकारी सर्वेक्षक	31-08-2016

मनोरंजन क्लब का वार्षिकोत्सव

आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र के मनोरंजन क्लब का वार्षिकोत्सव दिनांक 30-04-2016 को सम्मेलन कक्ष में भव्यता के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मनोरंजन क्लब के अध्यक्ष श्री बी.एच राव, निदेशक (वर्तमान कर्त्तव्यभार), आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केंद्र ने की। इस अवसर पर मंच पर उपाध्यक्ष श्री. कल्याण कुमार गुप्ता, अधीक्षक सर्वेक्षक एवं ले.कर्नल सुनिल फतेहपूर, अधीक्षक सर्वेक्षक भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के आरंभ में दिवंगत सदस्यों को श्रदधांजली अर्पित करने के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। तत्पश्चात अध्यक्ष महोदय ने मनोरंजन क्लब के सचिव श्री. सी.एच.रामलिंगम को वर्ष 2015-16 की की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आग्रह किया।

सचिव श्री सी.एच.रामलिंगम ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने से पूर्व निम्नलिखित नए सदस्यों को आह्वान करते हुए सभा में परिचय करवाया।

1. ले.कर्नल सुनील एस. फतेहपूर अधीक्षक सर्वेक्षक
2. श्री एन. श्रीनिवास, अधिकारी सर्वेक्षक
3. श्री वी. राजकुमार, कार्यालय अधीक्षक
4. श्री एम. नारायण राव, कार्यालय अधीक्षक
5. श्री भीमसेन राव कुल्कर्णी, मानचित्रकार, डि- I
6. श्री एस.श्रीनिवास, सर्वेक्षक
7. श्री डी. नरसिंहा, मानचित्रकार, डि- I
8. श्री डी. कृष्णा राव, मानचित्रकार, डि- I
9. श्री सेल्वाराजू, जमादार

फिर सचिव श्री सी.एच.रामलिंगम ने वर्ष 2015-16 की वार्षिक रिपोर्ट को प्रस्तुत किया, जिसे आम सहमति से करतल ध्वनि से पारित कर दिया गया ।उन्होंने यह भी कहा कि कलब के सदस्यों के सहयोग एवं सही मंशा में कारण ही हम अपने कलब के मृतक सदस्यों के परिवारों को सहायता राशि उपलब्ध करा पाए। प्रत्येक सदस्य ने रू.100/- की सहायता राशि का सहयोग दिया।

वर्ष 2015-16 में निम्निलखित दिवंगत व्यक्तियों के परिवार को सहयोग राशि प्रदान की गई।

1. श्री एम. बाबू, खलासी, रू 21000/-

2. श्री गेन्डु राम, खलासी, रू 16100/-

फिर अध्यक्ष महोदय ने कोषाध्यक्ष, श्री बी. रामाकृष्णा को वर्ष 2015 -16 का लेखा (Acoounts) प्रस्तुत करने को कहा जिसे भी करतल ध्वनि से आम सहमति के आधार पर पारित कर दिया गया।

तब अध्यक्ष महोदय ने खेल सचिव श्री अश्फाक अहमद को विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं का नाम पढ़ने को कहा एवं सभी विजेताओं को उनके कर कमलों से पुरस्कृत कर बधाई दी।

फिर अध्यक्ष महोदय ने सभा को अवगत कराया कि वर्तमान कार्यकारिणी मंडल ने अपने जी.डी.सी. कार्य का बहुत चाप रहने के बावजूद सारे कार्यक्रमों को समयानुसार निपटारा करते हुए अच्छा काम किया और सभी सदस्यों को करतल ध्वनि में बधाई देने को कहा जिसे सभा ने अनुपालन किया। फिर अध्यक्ष महोदय ने अवगत कराया कि वर्तमान कार्य मंडली भंग की जा रही है और सभा से आग्रह किया कि नई कार्य कारिणी मंडली का चुनाव कराने सब सहयोंग दे एवं उपाध्यक्ष श्री कल्याण कुमार गुप्ता को चुनाव कराने का अधिकार सौंपा।

निम्नलिखित कार्यकारिणी मंडली ने वर्ष 2016-18 के लिए कार्यभार संभाला।

<u>वर्ष 2015-17 के कार्यकारिणी सदस्य निम्न है</u>

1. सचिव	श्री एन. बलराम स्वामी
2. संयुक्त सचिव	श्रीमती जी. शीला रानी
	श्री एम.वी. विजय कुमार
3. सांस्कृतिक सचिव	श्री वेंकट एम नायुडू
4. क्रीड़ा सचिव	श्री. सय्यद इद्रीस
5. सहायक क्रीड़ा सचिव	श्री. ओ.प्रवीण कुमार
6. पुस्तकालयाध्यक्ष	श्रीमती शैलबाला खंडूरी
7. सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	श्रीमती. जे. कनक लक्ष्मी
8. कोषाध्यक्ष	श्री लक्ष्मण कुमार
9.संगठनकर्ता सचिव	श्री. ए. शैलेष
10. ग्रुप 'सी'(पूर्व ग्रुप 'डी') प्रतिनिधिगण	श्रीमती अनुसूया
	श्री योसाब
	श्री सदानन्द
	श्री रमेश बाबू
11.एम.टी.डी. प्रतिनिधि	श्री. श्यामल दास

12.लेखा परीक्षक श्री. वी. राजकुमार

श्री एम.नारायण राव

आम सभा ने नयी कार्यकारिणी का हर्षोल्लास से स्वागत किया एवं करतल ध्वनि से उत्साहवर्धन किया।

इसके बाद अध्यक्ष महोदय ने सही संतुलन से सेवाएं प्रदान करने के लिए नई कार्यकारिणी मंडली से आग्रह किया और केन्द्रीय मनोरंजन क्लब की ओर से हमारी जी.डी.सी, सचिव पद पर होने के नाते विभिन्न खेलों के आयोजन का सुचारू रूप से संपन्न कराने की जिम्मेदारी लेने को कहा।

उसके बाद श्री. एन.बी. स्वामी ने अखबार/ पुस्तिकाओंका मुद्दा उठाया जिसे अध्यक्ष महोदय ने यह कहते हुए टाल दिया कि मामला कार्यकारिणी मंडली की बैठक में विचार किया जा सकता है।

अंत में सभा ने श्री टी. महाराणा, अधिकारी सर्वेक्षक एवं श्री एल. योहान, खलासी को उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर विधिवत विदाई दी।

अंत में श्रीमती सी. प्रविणा, संयुक्त सचिव ने धन्यवाद प्रस्ताव देकर सभा को पूर्वनिर्धारित प्रीति भोज में शामिल होने की गुजारिश की और इस प्रकार आम सभा समाप्त हुई।

मनोरंजन क्लब द्वारा आयोजित किए गए खेल

कैरम	टेबुल टेनीस	शटल	वॉलि बाल	रस्साकशी	धीमी साइकिलिंग	संगीत युक्त कुर्सी दौड़- एक खेल	क्रिकेट	स्पीड वॉकिंग
पुरुष सिंगल्स महिला सिंगल्स मिक्सड डबल्स	पुरुष सिंगल्स पुरुष डबल्स	पुरुष सिंगल्स महिला सिंगल्स मिक्सड डबल्स	पुरुष	पुरुष	पुरुष	महिला	पुरुष	<40 & >40

वर्ष 201 5 -16 के दौरान केन्द्रीय मनोरंजन कलब स्पोर्टस से प्राप्त इस निदेशालय के प्रतिष्ठा एवं सम्मान

कैरम		
खेल	**प्रथम पुरस्कार**	**द्वितीय पुरस्कार**
पुरुष सिंगल्स	एन. शशि किरण	सय्यद इद्रिस
पुरुष डबल्स	सय्यद इदरिस एवं एन. भद्रु	अश्फाख अहम्मद एवं सी. अनिल कुमार
महिला सिंगल्स	जी. शीला रानी	बी. वरलक्ष्मी
महिला डबल्स	बी. वरलक्ष्मी एवं जे. कनकलक्ष्मी	जी. शीला रानी एवं बिंता देवी
टेबुल टेनीस		
पुरुष सिंगल्स	डी.रवि बाबू	ओ.प्रवीण कुमार
पुरुष डबल्स	डी.रवि बाबू एवं एन.बी. स्वामी	वी. सुरेश एवं ए.शैलेश
शटल		
पुरुष सिंगल्स	ओ. प्रवीन कुमार	जगन मोहन
पुरुष डबल्स	वी. सुरेश एवं ओ. प्रवीण कुमार	बी.नागरत्नम एवं सय्यद अहमद
शतरंज		
पुरुष	जगन मोहन	अश्फाख अहम्मद
धीमी साइकिलिंग		
पुरुष	एस. रवि	रहमत बाशा
ब्रिस्क वाकिंग		
पुरुष	एस. रवि	एम. रमेश बाबू
संगीत युक्त कुर्सी दौड़-एक खेल		
महिला	पुल्लम्मा	शैलबाला खंडूरी
लेमन अण्ड स्पून		
महिला	शैलबला खंडूरी	सी. प्रवीणा
दौड़ - 35 साल से कम आयु वालों के लिए		
पुरुष	एस. रवि	वै .के. राकेश
दौड़ - 35 साल से अधिक आयु वालों के लिए		
पुरुष	वी. सुरेश	सय्यद इद्रिस

वॉलि बाल		
पुरुष	विजेता	प्रतियोगिता में द्वितीय
	ओ. प्रवीण कुमार एन. बी. स्वामी डी. रवि बाबू एम. विजय कुमार बालाकेसवैय्या एम. रमेश बाबू एन.शशि किरण एम. सुवार्तय्या	वि. सुरेश पी. रविकान्त पी.सी. कोन्डय्या के. ओमकार स्वामी अश्फाक अहमद वी. गोपाल राव जी. वी. एम.नायुडू के. वेंकटेश्वरलू
पुरुष	**विजेता क्रिकेट**	
	एस. बाबू वी.सुरेश डी. रवि बाबू ओ. प्रवीण कुमार एन.शशि किरण एम. योसब सी. अनिल कुमार बी. गोपाल राव पी. रविकांत सय्यद अहम्मद वी. गोपाल राव	ले.कर्नल सुनिल फतेहपूर सय्यद इदरिस ए. शैलेश के.ओमकार स्वामी जगन मोहन एस. शांति भूषण राव पी. शेखर बाबू एम. सुवार्तय्या सय्यद मोजम पी.सी.कोंडय्या एम. विजय कुमार एम रमेश बाबू विजय प्रभाकर
विजेता रस्साकशी		
पुरुष	एस. बाबू बी. नागरत्नम एस. के. कदरवली पी. शेखर बाबू एस.के. मस्तानवली	पी. रविकांत वी. सुरेश एन. शशि किरण एम. सुवार्तय्या एम. रमेश बाबू

	एस.के. कासिम पीरा एस.के. मेहबूब पीरा एस.के. रहमत बाशा के.वी. चल्लमैय्या के.ओमकार स्वामी सय्यद मोजम के. जॉन विलसन टी. भास्कर वी. गोपाल राव	वेदनायकम एम. योसब एस. रवि ली. संजीवय्या पी.सी.कोंडय्या जी. शेखर सय्यद अहमद अश्फाख अहमद सी. बाबू

स्मृति - शेष

स्व. एम. बाबू

जन्म - तिथि	:	21-10-1961
विभाग में भर्ती होने की तिथि	:	18-05-1995
स्वर्गवास	:	31-10-2015
परिवार	:	इनके परिवार में पत्नी के अलावा तीन बच्चे हैं।

स्व.गेन्डूराम

जन्म - तिथि	:	04-02-1958
विभाग में भर्ती होने की तिथि	:	28-11-1980
स्वर्गवास	:	19-01-2016
परिवार	:	इनके परिवार में पत्नी के अलावा चार बच्चे हैं।

इनके आकस्मिक निधन पर आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के कर्मचारियों को गहरा आघात पहुँचा और सभी ने इनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की एवं इनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हुए दो मिनट का मौन रखा।

उनके परिवारों की तत्काल सहायता के लिए पूरे आंध्र प्रदेश भू स्थानिक आँकड़ा केन्द्र के परिवार ने रू100 /- की दर से , क्रमशः रू 21000 /- एवं रू.16100 /- का सहयोग दिया।

भू-स्थानिक जानकारी विनीयमन बिल– एक आवश्यकता

(श्री के.के. गुप्ता, अधीक्षक सर्वेक्षक)

दिनांक 4 मई 2016 को गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने “भू स्थानिक सूचना विनियमन बिल 2016” का एक मसौदा जारी किया। इस मसौदे के अनुसार, यह भारत के किसी भी भू-स्थानिक सूचना के अधिग्रहण, प्रचार-प्रसार, प्रकाशन या वितरण के पहले सरकारी प्राधिकरण से अनुमति लेना अनिवार्य होगा ।

हालांकि यह बिल मसौदे के चरण में ही है और सुझाव प्राप्ति हेतु प्रकट किया गया है, इसके मुख्य विशेषताएं समझना महत्वपूर्ण है:

भू स्थानिक सूचना का क्या मतलब है।

मसौदा के अनुसार इसका मतलब है:

- अंतरिक्ष या हवाई प्लेटफॉर्म जैसे उपग्रह, विमान, वायुपात, बैलून, मानव रहित हवाई वाहन आदि के माध्यम से प्राप्त भू स्थानिक चित्रण या आंकड़ा।
- प्राकृतिक या मानव द्वारा तैयार भौतिक आकृतियों, घटनाओं या पृथ्वी की सीमाओं का आलेखीय या अंकीय आंकड़े का चित्रण।
- सर्वेक्षण, चार्ट, नक्शे, स्थलीय फोटो की संदर्भ सहित एक समन्वय प्रणाली और उनकी विशेषता/ गुण से संबंधित कोई भी सूचना ;

बिल में क्या है ?

सरल शब्दों में, भारतीय भूभाग के अंदर किसी भी प्रकार की भू-स्थानिक सूचना या स्थान में, कोई भी अतिरिक्त सूचना को जोड़ना या सर्जन करने हेतु भारत सरकार से या इस मामले में एक सुरक्षा पुनरीक्षण प्राधिकरण से अनुमति प्राप्त करनी होगी।

सुरक्षा पुनरीक्षण प्राधिकरण क्या करता है?

ऐसे संगठनों / व्यक्तियों, जो भू-स्थानिक आंकड़ों का उपयोग करना चाहते हों, उन्हें लाइसेंस प्रदान करता है। यह सारांश एवं उपलब्ध आंकड़ों की जांच करेगा और "राष्ट्र की सुरक्षा, संप्रभुता, सुरक्षा और अखंडता की संरक्षण की एकमात्र उद्देश्य को ध्यान में रखकर” यह सुनिश्चित करेगा कि वह राष्ट्रीय नीतियों की परिधि में मौजूद है।

यह किसे प्रभावित करेगा ?

हर व्यक्ति, हर व्यवसाय जो कार्य हेतु स्थान को मुख्य रूप से उपयोग करता है। साधारण गूगल के अलावा , ओला, उबेर, जोमाटो, / ओयो और AirBnB जैसे व्यावहारिक एप्स भी इसमें शामिल हैं । ट्विटर और फेसबुक जो हमारी मौजूदा स्थान पर नजर रखते हैं , वे भी इसमें शामिल हैं ।

मैं इस कानून का उल्लंघन करूं तो क्या होगा ? (यदि लागू हुआ तो)

भारतीय भूभाग का भू-स्थानिक सूचना के अवैध अधिग्रहण करने पर एक करोड़ रूपए से 100 करोड़ रूपए तक का जुर्माना और/ या सात साल तक की सजा का प्रावधान है ।

भारतीय भू-स्थानिक सूचने का अवैध प्रसार, प्रकाशन या वितरण – जो भी धारा (4) के विपरीत भारत के किसी भी भू-स्थानिक सूचना का अवैध प्रसार, प्रकाशन या वितरण करते हैं, उन्हें 10 लाख रूपए से 100 करोड़ रुपये तक का जुर्माना या /और सात वर्ष तक की अवधि का दण्ड दिया जाएगा ।

विदेश में भारतीय भूस्थानिक सूचना का प्रयोग करने पर - 1 करोड़ रूपए से लेकर 100 करोड़ रूपए तक का जुर्माना और/या सात साल तक की कैद का दंड दिया जाएगा ।

नया क्या है ?

भू स्थानिक बिल में नया कहने लायक ज्यादा कुछ नहीं है । नए सिरे से तैयार किए गए सभी मानचित्र सूचनाओं की सुरक्षा एजेंसी द्वारा पुनरीक्षण की आवश्यकता एक वास्तविकता है जिसे नए सिरे से तैयार किए गए सभी मानचित्रों की सुरक्षा एजंसी द्वारा पुनरीक्षण की आवश्यकता एक वास्तविकता है जिसे भारत सरकार के अधीनस्थ भारतीय सर्वेक्षण विभाग के साथ – साथ अन्य भारतीय मानचित्रण कंपनियाँ बखूबी निभा रही हैं । ग्राहकों हेतु विमोचन करने से पहले, उन्नयन किए गए मानचित्र आंकड़ों के सेट को रक्षा मंत्रालय को वे नियमित रूप से प्रस्तुत करते हैं ।

संचालन हेतु लाइसेंस की आवश्यकता में एक सूक्ष्म समायोजन है क्योंकि ज्यादातर मानचित्रण निर्माण कंपनियां , राष्ट्रीय मानचित्रण पालिसी, 2005 के अधीन मौजूद पांच लाइसेंसों में से एक के अंतर्गत पहले से ही काम कर रही हैं । भारतीय राष्ट्रीय सीमाओं को गलत तरीके से मानचित्रों में प्रकाशन करना अवैध रहा है । और जहां तक भारतीय भू स्थानिक सूचना का विदेश में इस्तमाल पर रोक का सवाल है, ब्रिटिश काल के जमाने से अधिनियम पुस्तकों में सब कुछ विस्तृत है ।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग का मूल उद्देश्य था कि मानचित्र तैयार करते समय भारतीय मानचित्र विनिमय, समय के अनुरूप अपने मूलबिन्दू का पता लगा पाएगा । उन दिनों में, सन् 1830 में, सर जार्ज एवरेस्ट द्वारा निर्मित एवरेस्ट गोलाभ सतह पर नक्शों का आरेखण किया जाता था जो कि भारत और

उपमहाद्वीप के भूखंड का सही भौतिक सतह माना गया है । एवरेस्ट गोलाभ के नक्शों को मानचित्रकारी के हिसाब से सटीक पाया गया है जो भारत में अलग-अलग दो बिन्दुओं (स्थानों) की सटीक दूरी का मापन परिणाम देता था । भारतीय सर्वेक्षण विभाग के नक्शे एक अमूल्य, निपुण, फायदेमंद प्रति के रूप में साबित होने पर रक्षा स्थापना ने इसकी सुरक्षा करने की ठान ली जिसके कारण ऐतिहासिक तौर पर भारतीय नक्शा विनिमय ने उन नक्शों के इस्तेमाल पर खास तौर पर विदेश में नक्शों को ले जाने पर कठिन प्रतिबंध लगा दिया ।

70 के दशक तक तो उपरोक्त स्पष्टिकरण ने अपना अभिप्राय व्यक्त किया होगा, आज की तारीख में राष्ट्र- विशिष्ट ज्योड़ीय प्रेषण बिन्दुओं की परिरक्षण करने में अक्षरशः कोई निपुणतापूर्वक लाभ तो नहीं होगा । जब से संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने आधुनिक ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (GPS) हेतु, विश्य ज्योड़ीय तंत्र (WGS-84) का संबंधित ढ़ाचे को विकसित किया, पूरे विश्व में मानचित्रण एजेंसियों ने अपने मानचित्र आंकड़े को इस सामान्य ग्लोबल मानक (Common Global Standard) में पिरो लिया । भारतीय सर्वेक्षण विभाग ने भी 1:50000 के पैमाने पर ओपन सीरीज नक्शों का प्रकाशन करते हुए, राष्ट्रीय मानचित्रण पॉलिसी, 2005 के तहत इस ग्लोबल मानक को अपना लिया ।

हम पिछले 4-5 वर्षों में भारत में मानचित्रण आधारित सेवाओं में नवजागरण का दर्शन कर रहे हैं । हमने इर्द- गिर्द मार्गनिर्देशन हेतु, गूगल में मौजूदा ट्राफिक की जानकारी हेतु, ओला और उबेर जैसे टेक्सी सेवाएं हेतु, जो भू स्थानिक पारितंत्र (ecosystem) पर चलते हैं और कई ऐसी मूल्यवान सेवाएं जो हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है आदि के लिए अपने फोन पर हम आज पूर्ण निर्भर हैं । फिर हमारे देश की मानचित्र विनिमय होने के बावजूद, हम इतनी सारी सेवाओं का लाभ कैसे उठा रहें हैं ?

मैं, भू-स्थानिक बिल के मसौदे में किसी भी प्रकार के प्रावधानों से हैरान नहीं हूँ क्योंकि यह सारे प्रावधान पहले से ही लागू हैं और रक्षा मंत्रालय के माध्यम से सुरक्षा पुनरीक्षण द्वारा लागू किए जा चुके हैं । जुर्माना काफी कड़ा है और तार्किक तौर पर सजा, अपराध के परे है, किन्तु ये अधिनियम नये नहीं है और जब तक सरकार अधिनियम लागू करने की बंद-आंख दृष्टिकोण अपनाती है, हमें अच्छा ही है ।

अगर इस रीति सूचक बिल को सरकार प्रवर्तन कराना चाहती है, यथार्थ रूप से हम अपने आप को एक असहज, नई वास्त्विकता को अपनाने जा रहे है । क्योंकि, वर्तमान हो या भविष्य, यदि हमारे नक्शों के विनिमय को सख्ती से प्रवर्तन कराया गया हो तो, कई सुविधाएं और कई आरामदायक चीजें, जो हमने अपने आप को स्वीकृत मान लिया है, से वंचित रह जायेंगे , आइए, इसका सामना करें ।

सर्वेक्षण में भारतीय दिग्गजों की भूमिका

(श्री रवि किरण, अधिकारी सर्वेक्षक)

वर्ष 2017 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग अपने अस्तित्व का 250 वीं वर्षगांठ मना रहा है। ऐसे में उन दिग्गजों को याद न करना अन्याय होगा जिन्हें कोई खास अहमियत नहीं मिली और भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कई सारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके बारे में मालूम भी नहीं होगा। ऐसे ही कुछ दिग्गज जिन्होंने भारतीय सर्वेक्षण विभाग की बुनियादी ढांचा रखा, इस 250 वीं वर्ष गांठ पर उन्हें याद करना हमारा फर्ज बनता है ।

श्री राधानाथ सिकदार :- सन् 1831 के प्रतिभावान गणितज्ञ के साथ- साथ गोलीय त्रिकोणमिति (Spherical Trigonometry) में अद्‌भुत योगदान दिया और सर जार्ज एवरेस्ट (गुलाम भारत के प्रथम महासर्वेक्षक) के साथ काम किया। सर जार्ज एवरेस्ट की सेवानिवृत्ति के पश्चात, श्री सिकदार ने उसके अधीनस्थ कर्नल वॉ के साथ दार्जिलिंग स्थित कंचनजंघा पर्वत श्रेणी का मापन किया। आम लागों द्वारा मापन परेशानी को दूर करने के लिए उन्होंने सहकारी सारणी (Auxilary Table)को तैयार करने का जो महत्वपूर्ण योगदान दिया, वह आज भी सराहनीय है जिसका इस्तेमाल पिछले 90 के दशक तक होता रहा।

यही वह महान व्यक्ति थे जिन्होंने चोटि संख्या XV के आंकड़े को छः अलग- अलग प्रेक्षणों (Observations) का संकलन (Compilation) किया कि चोटि संख्या XV ही दुनिया की सबसे ॐची चोटि है। वाकई में यह दु:ख की बात है कि कर्नल वॉ ने उस चोटि का नाम अपने पूर्वज सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम माउंट एवरेस्ट रख दिया जब कि सर जार्ज एवरेस्ट ने उस चोटी तक पहुँचना तो दूर, दर्शन भी नहीं किया था और श्री राधानाथ सिकदार का नाम आसानी से अंग्रजों की चालाकी का शिकार को गया।

पंडित नैन सिंह रावत:-यह वह महान हस्ति हैं जिन्होंने हिमालय पर्वत श्रृंखला की खोज की और बृहत त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण (Grand Trignomotrical Survey) का सफलता पूर्वक समापन किया।

उन्होंने नेपाल से लेकर तिब्बत तक की 20000 कि. मी. लम्बे रास्ते का सर्वेक्षण किया एवं लाहसा शहर की ॐचाई का अवगत कराया।

उनको खगोल शास्त्र का भी अच्छा ज्ञान था जिसकी बदौलत मुख्य तारे एवं तारे समूह को आसानी से पहचान कर अंधेरे में भी दिशा की जानकारी रखते थे। चूंकि वे एक "जासूसी खोजकर्ता " थे, उनकी महान एवं महत्वपूर्ण खोजों का सही पहचान नहीं हो पाया।

मानसिंह रावत :-अंगेजों के शासनकाल में वे "मनी कम्पास" के नाम से विख्यात हुए और महा खण्ड की खोज में आवश्यक किरदार का पात्र निभाया था।

हरी राम :- एक महान पंडित, जिन्होंने सन् 1871-72 में, एवरेस्ट चोटी के चारों ओर समुद्री यात्रा के दौरान, करीबन 78000 वर्ग कि.मी. की अनजान प्रदेश की खोज की।

कृष्ण सिंह :-1878 में लाह्सा शहर को उन्होंने सील किया था। वे कदमों से दूरी मापने में माहिर थे। एक बार डकैतों के क्षेत्र से अपने घोड़े की उछाल कदमों के हिसाब से सटीक माप लगा लिया था।

शरत चंद्र दास :-सन् 1879 में 1800 फीट ॐचाई पर स्थित डोंक्या पास को चमर (YAK) पर बैठकर पार किया था।

यह आख्यान तो चलता रहेगा। हमें भारतीयों को तो नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने भारतीय सर्वेक्षण विभाग के इतिहास में एवरेस्ट चोटी की स्केलिंग एवं "बृहत त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण" जैसे अस्तित्वों में खासा योगदान दिया।

पिछले 250 साल से देश सेवा को समर्पित "भारतीय सर्वेक्षण विभाग' जैसे संस्थान से जुड़े रहने का अवसर मिलने के लिए हमें गर्व महसूस करना चाहिए।

सर्वे जनाः सुखिनोः भवन्तु।

आधुनिक युग की भाग दौड़ की जिंदगी

(एन. बलराम स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक)

हम आजकल आधुनिक युग में जी रहे हैं। इस आधुनिक युग में लोगों के पास औरों की तो दूर , अपने लिए भी सोचने की फुर्सत नहीं है। भागने की होड़ ।वह भी कमाने के लिए। अधिक पैसा। और अधिक पैसा। सुबह उठो। तो तनाव। क्या ना। कल ही सोचा था रात को सोते समय कि आज क्या – क्या करना है। कहीं तनाव में भूल ना जाए । डायरी में भी लिखकर रख लिया। बस इसी सोच से सुबह की शुरूआत हुयी। बीबी चाय देने के अन्दर फुर्र से ब्रश कर लिया। अखबार पढ़ने का समय नहीं। तो संडास करते हुए उसे पढ़ लिया। नहा धोकर आए तो बीबी ने नाश्ता एवं लंच पैक कर दिया ।कपड़े निकाल कर रख दिए। जनाब आए । फाटाफट कपड़े पहने। जूते पहने और नाश्ता एंव लंच बैग लेकर भागे। कहीं यह भी नहीं पूछा कि बच्चे उठे कि नहीं, स्कूल जाना है कि नहीं, उन्हें कुछ चाहिए तो नहीं। गेट पर केब आ गयी, बैठे और चल दिए। आफिस पहुँचने में अभी आधा घंटा बाकी है। चलो नाश्ता कर लो केब में ही। आफिस पहुँचे। बॉस ने चाय पानी दे दिया। चाय पीते पीते आपनी डायरी और लेपटॉप खोल कर में चेक किया। लोगों को जवाब दिया। फारवार्ड किया। मैसेज रखा कि किसने क्या किया और आगे क्या करना है। पहले दिन तक कि स्टेटस रिपोर्ट बनाई और बॉस को अवगत कराया और समझाया।

अभी पूर्व कार्य की काया कलप भी पूरी नहीं हुयी कि बॉस ने एक और काम का प्लानिंग करने एवं करवाने का ढांचा तैयार करने को कह दिया ।फिर से नया काम, नयी योजना शुरु। इसी में भूल गया कि लंच टाइम हो गया। बॉय ने लंच की याद दिलाई एवं खाना लगने वाला था कि बॉस का फोन आ गया , चलिए अमुक होटल के बेंके हाल में कान्फेरंस में चलना है और अपनी कम्पनी की कार्य कलापों के बारे में लोगों को अवगत कराना है। क्या करें बॉस ने कहा है तो उनके साथ चलना पडेगा। फिर सुबह के कार्य की प्लानिंग तो पूरी हुई नहीं। बॉस ने कह दिया, सुबह जो काम दिया गया था, उसे अहमियत कम करने को कहकर, अभी होने वाले कान्फेरेंस के लिए पावर पाइंट प्रेजेन्टेशन (PPT) तैयार करने को कहा। ऑफिस से कान्फेरेंस पहँचने में आधा घन्टा है तो बॉस ने उसी आधे घंटे में गाडी पर बैठकर PPT बनाने को कह दिया। बस यही बस नहीं, बॉस को दिखाकर समझाना भी कि उन्हें वहां क्या बोलना है । कांफेरेंस खत्म होते होते शाम को गयी। लंच के बदले, वहां मिली चाय, बिस्कुट से आत्माराम को शान्त करना पड़ा। दोनों मिलकर फिर ऑफिस पहुँचे। सुबह लोगों को जो काम दिया था, उसका जायजा किया गया। समाप्त कार्य को एकीकृत किया गया। बॉस को समर्पित किया गया। फिर भी पुराने एवं सुबह के काम का क्या हुआ। मरे मन से बोलने पड़ा कि " सर, डोंट वर्री। घर पर मैं सारा कुछ निपटा दूंगा एवं कल सुबह आपको सारा अवगत करा दूंगा।" बॉस कहता है, "घर जाकर क्या कर दूगां ?। यहीं निपटारा करके घर जा। जाते – जाते मुझे ई –मेल में डाल देना एवं फोन पर बता देना। मैं घर पर देख लूंगा। सारा कुछ सही रहा तो अगली रणनीती पर विचार करूंगा।" फिर भी मरे

मन से बोलना पड़ता है, “ यस सर । माय प्लेजर । आइ विल डू वाट एक्जाक्ट्ली यू वान्ट । बट सर । अगर उसमें कोई संशोधन हो तो कृपया मुझे बताने में झिझकना नहीं सर । मैं सही करके उसे फिर दोबारा ई-मेल कर दूंगा ।“ सही करते करते रात के आठ बज गए । बॉय कहता है, “ सर आपका डब्बा दोपहर का रह गया । गर्म करके दे दूं खाना? । मरे मन से कहना पड़ता है , “ टाइम नहीं है । भूख तो लगी है । चल एक काम कर । उसे तू खा लेना ताकि तू मेरे जाने तक मेरे साथ रहेगा । बाकि लोगों को जाने बोल दे “ । काम खत्म होते- होते रात के साढ़े दस बज गए । घर दौड़े । हाथ- मुंह धोकर आया तो बीबी ने खाना लगाया और बोलने लगी, “चिन्टू को स्कूल में प्रोजेक्ट जमा करने के लिए कुछ चीजों की जरूरत थी, मेरे पास पैसे कम थे, । रोते- रोते सो गया”फिर कहना पड़ता है ,” क्या करूं तुम तो जानती हो, सन्डे के सिवाय बाकि दिन मेरे पापड़ बेले जाते हैं । यह लो ए.टी.एम कार्ड और जितना चाहे ड्रा कर लेना और बच्चों की जरूरत पूरी कर लेना ,बीबी कहती है, “ घर की एवं मेरी जरूरत के लिए कुछ शापिंग भी करनी थी । सोच रही हूँ, बच्चे स्कूल चले जायें तो मैं शापिंग के लिए चली जाउँ । क्योंकि तुम्हारे पास तो वक्त ही नहीं है ।“ सही लगे या गलत, वक्त का खेल है आ मुंह से कहना पड़ता है, “ठीक है ” । फिर खाए पिए । बीबी जब तक किचन का काम करके आती पता नहीं लगा आंखे कब लग गयी ।

इन्सानियत

(श्री चरण दास नारायण गेडाम, अधिकारी सर्वेक्षक)

एक नगर के नज़दीक एक होटल था। जिसका मालिक लालचंद्र, एक दयालु और सज्जन व्यक्ति था। होटल अच्छी आमदानी देता था। उस सेठ का जीवन सुखी चल रहा था। परिवार में उसका कोई नहीं था। माता- पिता का देहान्त काफी समय पहले हो चुका था। उसका विवाह भी नहीं हुआ था।

लालचंद्र की एक विशेषता थी कि वह अपने होटल में आने वाले हर विकलांग को मुफत में भोजन कराता था। कई वर्षों तक यह कार्य निरंतर चलता रहा। वह रोज सुबह चिड़ियों को दाना भी दिया करता था। ऐसा करने से उसे बहुत शांति मिलती थी। यह बात अमूमन अपने दोस्तों से कहा करता था।

एक दिन एक और सज्जन ने लालचंद्र से पूछा, "आप ऐसा करते है तो आपको नुकसान नहीं होता ?" तब लालचंद्र ने जवाब दिया , मैं हर दिन पक्षियों को दाना देता हूँ। मैंने गौर किया कि किसी अपाहिज पक्षी का दाना कोई अन्य पक्षी नहीं चुगता है।

वे पक्षी है, उनमें यह भाव है, मैं तो इंसान हूँ। मैंने सोचा, मुझे हर विकलांग व्यक्ति को भोजन कराना चाहिए। तभी से मैं इस राह पर चल पड़ा । ऐसा करने से मुझे आत्मिक शांति मिलती है।

निष्कर्षः इंसान तो सभी होते है, लेकिन वैष्णवता यानि इंसानियत कुछ इंसानों में ही होती है ।वैष्णव शब्द में वै का मलतब दूसरों का। ष्ण का मललब दुःख या पीड़ा। व का मतलब अपना। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी ऐसे ही एक भजन गाते थे। "वैष्णव जन तो तेणे रे कहिए जे पीर पराई जाणे रे "। मतलब जो औरों की दुःख को समझने वाला है, उसे ही वैष्णव कहते हैं । वही इंसान सही मायनों में सच्चा वैष्णव है जो दूसरों के दुःख को अपना समझकर उन्हें खुश कर उनमें अपनी खुशियाँ खोजता है।

खरगोश एवं कछुए की आधुनिक कहानी

(श्री रवि किरण, अधिकारी सर्वेक्षक)

एक दिन एक खरगोश और कछुए में बहस हो गया कि कौन तेज है। दोनों एक निर्णय पर पहुँचे कि एक दौड़ हो जाए। दोनों ने मिलकर एक रास्ता चुना कहां से शुरू करना है और कहां गंतव्य होगा । फिर दोनों में दौड़ शुरू हो गई। खरगोश भागने में तेज था और कुछ दूर तक भागकर रूक गया , पीछे मुड़ा। कछुए का कहीं नामों निशान नजर नहीं आया। सोचा कि इस पेड़ के नीचे बैठकर कुछ आराम कर लूं। बैठा ही था कि उसकी आंखें लग गई। कछुए अपनी मटक चाल चलते हुए, सोये हुए खरगोश को पार करते हुए, आगे बढ़ता चला गया और खरगोश जब तक उठकर होश संभालते हुए, आगे दौड़ना शुरू किया, कछुआ गंतव्य रेखा को छू चुका था और खरगोश को हार मानना पड़ा। हमें अब तक यही सीख मिली थी कि धीमी और संतुलित चाल से ही विजय प्राप्ति होती है।

कहानी अभी खत्म यही नहीं हुई। आगे जारी है। खरगोश दौड़ कर हार जाने के कारण काफी निराश हुआ और हार जाने के कारण सोचा । थोड़ी देर बाद, महसूस किया कि जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वास, लापरवाही और आलसी के कारण उसकी हार हुई। अन्यथा जीत तो मेरी ही थी और कछुए से हारने की नौबत ही नहीं आती थी।

तब खरगोश ने कछुए को दोबारा चुनौती दिया। कछुए ने मान लिया। इस बार खरगोश कहीं रूका नहीं और दौड़ शुरू किया तो गंतव्य रेखा पर पहुँचकर ही कई मीलों के अंतर से अपनी जीत हासिल किया।

सीख मिलती है कि तेज एवं सामंजस्य से ही धीमे एवं संतुलित लोगों पर विजय हासिल की जा सकती है। धीमा एवं संतुलन अच्छा है पर तेज और विश्वस्नीयता कहीं ज्यादा बेहतर है।

कहानी अभी खत्म नहीं हुई। आगे जारी है।

अब कछुआ सोच में पड़ गया और महसूस किया कि दौड़ में उसकी जिस तरह से बुरी हार हुई, जिंदगी में वह खरगोश से किसी भी प्रकार के दौड़ में नहीं जीत सकता। कुछ देर सोचने के बाद उसे एक उपाय सूझा। फिर उसने खरगोश को दौड़ के लिए चुनौती दी। दौड़ के लिए उसने पुराने वाले रास्ते को छोड़, नया रास्ता चुना जिसे खरगोश राजी हो गया ओर दौड़ शुरू हो गई।

तेज एवं सामंजस्य के गुणों से युक्त खरगोश ने दौड़ शुरू कर दिया। वह तब तक भागता रहा जब तक उसे नदी का किनारा नहीं मिला। गंतव्य रेखा नदी के दूसरे किनारे पर बस कुछ ही किलोमीटर दूर पर था। खरगोश असमंजस में पड़ गया कि क्या करना है क्यों कि उसे तैरना नहीं आता है। बस जल्दी पहुँचना है, मंजिल दिख रही है और सामने नदी की धार तेज है। इसी सोच में बेचारा सोच ही रहा था कि कछुआ वहीं

पहुँच गया। नदी के पानी में उतरा। तैरता हुआ नदी के दूसरे किनारे पर पहुँच गया और गंतव्य रेखा को स्पर्श कर लिया। बेचारा खरगोश हार गया।

सीख मिलती है कि प्रतिस्पर्धा की केन्द्र बिंदु को समझें और तब खेल मैदान को अपने गुणों के अनुरूप बदल दें। कुछ समय बाद प्रतिस्पर्धाओं में जूझते हुए, खरगोश और कछुआ अच्छे दोस्त बन गए और जो भी कार्य करते, आपस में विचार विमर्श कर ही करते थे। दोनों ने महसूस किया कि पिछले दौड़ अच्छे से दौड़ा जा सकता था भले ही कोई भी मंजिल हो एवं रास्ता कोई सा भी हो। तब उन दोनों ने और एक दौड़ की प्रतिस्पर्धा रखी । मगर अलग- अलग नहीं बल्कि एकजुट होकर। तब खरगोश ने कछुए को पीठ पर बिठाकर नदी के किनारे तक दोड़ लगायी। फिर नदी किनारे कछुए ने खरगोश को पीठ पर बिठाकर नदी के पार लगाया। फिर नदी के उस पार पहुँचते ही कछुआ फिर से खरगोश की पीठ पर बैठ गया और दोनों ने मिलकर कम समय में अपनी मंजिल हासिल कर ली और दोनों एक समान संतुष्ट हुए।

सीख मिलती है कि अपने अपने स्थान में हम चतुर एवं प्रतिस्पर्धा की केंद्र बिंदु पहचानने में माहिर को सकते हैं। किंतु जब तक हम मिलजुलकर औरों के गुणों का इस्तमाल करते हुए काम ना करें, हमारा स्थान हमेशा गिरता रहेगा क्यों कि कुछ ऐसी परिस्थितियां उभर सकती हैं जहां हम कमजोर हैं मगर और कोई उस काम में माहीर हो।

अतः कुल मिलाकर यह सीख है कि कोई भी काम मिलजुलकर करें। परिस्थिनियों के अनुरूप ही दल कार्य (Team work) का नेतृत्व करना या करवाना ही अनुकूल है ताकि गुणानुसार कार्य हो सके।

हालांकि यह सृष्टि मेरी कलम की जोर नहीं बल्कि मेरे विचार व्यक्त करने का साधन मात्र है।

एक मेंढक की कहानी

(पी. अभय, सुपुत्र पी.रवि किरण, सर्वेक्षक)

एक झील किनारे कुछ मेंढक रहते थे। पास में एक बड़ा सा पेड़ था। एक दिन एक मेंढक उस पेड़ के सबसे उपर वाले शाखा तक पहुँचना चाहा और चढ़ना आरम्भ किया। उसे देख नीचे खडे मेंढक चिल्लाने लगे। **असंभव असंभव !!!** पर वह मेंढक बढ़ते -बढ़ते पेड़ की ऊपरी शाखा तक पहुँच गया।

कैसे !!!

क्योंकि वह मेंढक बहरा था और वह समझ रहा था कि नीचे खडे मेंढक उसे ऊपर चढ़ने हेतु प्रोत्साहन दे रहे है।

नीतीः अगर आप का लक्ष्य में आगे बढ़ना है तो प्रतिकूल विचारों से बहरा बने रहें।

माँ – बाप की सेवा

(शेख. मेहबूब पीरा,पटल चित्रक)

एक बालक अपने माँ – बाप की खूब सेवा किया करता था । उसके दोस्त उससे कहते कि अगर इतनी सेवा तुमने भगवान की होती तो तुम्हें भगवान मिल जाते और तुम्हारी सब इच्छा पूरी हो जाती। तुम जो चाहते, वो तुम्हें मिल जाता । लेकिन इन सब चीजों से अनजान वो अपने माता पिता की सेवा करता है ।

एक दिन माँ-बाप के प्रति उसकी भक्ति से खुश होकर भगवान धरती पर आ गए । उस समय बालक अपनी माँ के पाँव दबा रहा था । भगवान दरवाज़े के बाहर से बोले "दरवाजा खोलो बेटा मैं तुम्हारी माता-पिता की सेवा से प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देने आया हूँ" । बालक ने कहा "इंतजार करें प्रभु मैं माँ की सेवा में लगा हूँ "। भगवान बोले देखो "मैं वापस- चला जाउँगा" । बालक ने कहा "आप जा सकते है" । भगवान मैं सेवा बीच में नहीं छोड़ सकता । कुछ देर बाद उसने दरवाज़ा खोला तो देखता है कि भगवान बाहर खड़े है । भगवान बोले लोग मुझे पाने के लिए कठोर तपस्या करते है पर मैं तुम्हें सहज ही से मिल गया पर तुमने मुझसे प्रतीक्षा करवाई । बालक ने जवाब दिया है, हे भगवान ! जिस माँ-बाप की सेवा ने आपको मेरे पास आने को मजबूर कर दिया उन माँ- बाप की सेवा बीच में छोड़कर मैं दरवाजा खोलने कैसे आता ? यही इस जिंदगी का सार है जिंदगी में हमारे माँ-बाप से बढ़कर कुछ नहीं है। हमारे माँ –बाप ने ही हमें यह जिंदगी दी है । यही माँ –बाप अपना पेट काटकर बच्चों का भविष्य संवारते हैं । इसके बदले हमारा यह फर्ज बनाता है कि हम कभी उन्हें दु:ख ना दें । उनकी आँखों में आँसू कभी ना आए चाहे परिस्थिति जो भी हो कोशिश कीजिए कि वे हमेशा खुश रहें ।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

(शैख रजिया सुलताना , सुपुत्री शेक. मेहबूब पीरा,पटल चित्रक)

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ - आज देश के सामने विकट समस्या हैं कि लड़कियों का अनुपात लड़कों की अपेक्षा कम होते जा रहा हैं । इस दिशा में काम करने हेतु गुजरात एवं मध्यप्रदेश सरकार ने बेटी बचाओ अभियान चलाया था जिसके अनुकूल परिणाम सामने हैं । इन दोनों राज्यों में 1000 लड़को की संख्या के साथ 880 लड़कियाँ ही हैं । और अब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसे देशव्यापी स्तर पर नारा दिया है इस योजना का नाम **बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओ** किया गया हैं क्यूंकि केवल बेटी को जन्म देना ही पर्याप्त नहीं उसे इस दुनिया में जीने के लिए काबिल बनाना भी माता- पिता का कर्तव्य है। अगर बेटी पढ़ी लिखी होगी तो दो परिवारों को

संस्कारित बना सकेगी । बेटी केवल एक परिवार का दी पक नहीं होती बल्कि दो परिवारों का नाम रोशन करती हैं। बेटियों को कम आंकने वाले जरा अपनी माँ की तरफ देखो यह वही हैं जिसने तुम जैसो को जन्म देकर इतना बड़ा बनाया और आज तुम्हीं अस्तित्व को मिटाने चले हो। कन्याभ्रूणहत्या एक बड़ा घिनौना अपराध है यह करके मनुष्य आज और कल दोनों को अंधकारमय बना रहा हैं । बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एक ऐसी योजना हैं जिसके जरिए देश के बेटियों की स्थिती मजबूत होगी । बेटा- बेटी के बीच का भेद भाव मिटेगा और मनुष्य जाति को आभास होगा कि एक बेटी में भी वही गुण हैं जो बेटे में हैं ।फर्क परवरिश एवं दृष्टिकोण का है। अत: बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं योजना का सहयोग करे और बेटी के अनुपात को बढ़ाएं । विस्तार से जाने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना । सुकन्या समृद्धी योजना ।, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना के अतर्गत शुरू की गई ऐसी योजना है जिसमें बेटियों के जीवन को सुधारने एवं भविष्य को सुरक्षित करने हेतु अहम कदम उठाये गए हैं । सुकन्या समृद्धी एक प्रकार का PPF Account हैं जिसमें टेक्स एवं इंटरेस्ट की विशेष सुविधाएं दी गई हैं । सभी बाते विस्तार से पढ़े ।

सुकन्या समृद्धी खाता योजना।

लालच की कीमत

(शेख. मेहबूब पीरा,पटल चित्रक)

एक लड़का था । जिसका नाम राजू था । वो पढ़ाई में बहुत अच्छा था । केवल पढ़ाई में ही नहीं बल्कि वह हर काम में अच्छा था । शिक्षक / शिक्षिका उसे बहुत पसंद करते थे और उसके सहविघार्थी उसका बहुत आदर करते थे । लेकिन कुछ बच्चे उससे जलते थे। वे लोग उसे बहुत तंग करते लगे । जब परीक्षा सामने आई तब राजू उन लड़को के कारण ठीक तरह से पढ़ नहीं पाया । परिणामस्वरूप उसे परीक्षा में कम अंक मिले । इससे उसके शिक्षक / शिक्षिका और उसके माता – पिता भी बहुत परेशान हुए । राजू यह बात किसी को खुलकर नहीं बता पा रहा था । फिर से जब वे लड़के राजू को चिढ़ाने लगे । इस बात से राजू को बहुत गुस्सा आया और उसने जाकर अपने कक्षाध्यापक से शिकायत की । तभी अध्यापक को भी गुस्सा आया और उन्होंने उन लडकों को बाकी परीक्षाएँ लिखने नहीं दी । जिससे वे लोग फेल हो गए । तत्पश्चात उन लड़को ने जाकर राजू से कहा 'राजू हमें माफ कर दो क्योंकि हमने तुम्हारे साथ बहुत बुरा किया । हमें तुम से जलन होती थी क्योंकि तुम अच्छा पढ़ते हो । हमें माफ कर दो ना राजू । राजू ने कहा कोई बात नहीं । मैं तुम लागों को माफ करता हूँ क्योंकि तुम्हें अपनी गलती का एहसास हो चुका है । तुम अपने आप को कभी भी दूसरों से कम मत समझो । अगर तुम कोई काम करना चाहते हो तो उसे पूरी श्रद्धा के साथ करो ।

इस्रो की उपलब्धीयाँ

(एम.राकेश,अधिकारी सर्वेक्षक)

भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान विभाग ने (ISRO) सारे विश्व के अग्रिम संस्थानों के सूची में अपना नाम बना लिया है। यह विषय हम सभी भारतियों के लिए गर्व का कारण है। हमारे वैज्ञानिकों ने अपने कठोर परिश्रम और कुशलता से हमारे देश को अन्तरिक्ष अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण स्थान पर पहुँचा दिया है।

हमने कई PSLV और GSLV से कृतिम उपग्रहों को अन्तरिक्ष में भेजा है। कई विकसित एवं विकासशील देश जैसे फ्रांस, जर्मनी, डेनमार्क, अमेरिका, दक्षिण आफ्रिका आदि हमारे सहयोग से अपने कृतिम उपग्रहों को अन्तरिक्ष में भेजा है। जब तक केवल अमेरिका, रूस, जपान, चीन देश ही अन्तरिक्ष क्षेत्र में सफल रहे है। अब भारत भी उन्हें चुनौति देने की स्थिति में है। अमेरिका के कई निजी अन्तरीक्ष विभाग अपने सरकार पर दबाब डाल कर हमारी अन्तरिक्ष अनुसंधान से अमेरिकी कृतिम उपग्रह भेजने पर प्रतिबन्ध लगाने पर मजबूर कर रही है। लेकिन इस प्रयत्न में वह कभी सफल नहीं हो पायेंगे क्योंकि हमारे उपग्रह भेजने की व्यवस्था स्वदेशी, कुशल और किफायती है।

हमने कुछ दिन INSS उपग्रहों का प्रयोग किया है जिससे हमारी अमेरिकी उपग्रहों पर से निर्भरता समाप्त हो जाएगी। अब तक हमारी तकनीकि कार्य जैसे सर्वेक्षण,नाविगेशन व्यवस्था, मौसम संबंधी सूचना,खेती, मिट्टी के सर्वेक्षण आदि कार्यों के लिए अमेरिकी उपग्रह (GPS) का उपयोग करते आ रहे हैं। इस क्षेत्र में स्वयं निर्भरता हमने पा लिया है।

इस कार्य से हमने साबित कर दिया है कि हम दुनिया के किसी भी देश से अन्तरीक्ष क्षेत्र में मुकाबला कर सकते है। दुनिया में बहुत से देश आज अपने उपग्रह ISRO के द्वारा भेजने के प्रयास में है। हमारे वैज्ञानिकों ने अमेरिका द्वारा 1999 के कार्गिल युद्ध के समय GPS डाटा नहीं देने के उपरान्त यह प्रण लिया था कि हम अन्तरिक्ष क्षेत्र में स्वयं निर्भरता पा कर ही रहेंगे और यही घटना हमारे वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा बना। हम हमारे देश के सीमा पर अवैध घुसपैठ को भी रोक सकते है। इस तरह हमारे देश को रक्षा करने में भी हम सक्षम साबित होंगे।

बाल मजबूरी

(शैख रजिया सुलताना , सुपुत्री शेक. मेहबूब पीरा,पटल चित्रक)

लिए दर्द आंखों में पूछा उसने मुझसे यूं
क्यूं होता है हमेशा हमारे साथ ही यूं ?
क्यूं नसीब हमसे ही रूठा रहता है ?
सच ही तो कहता है बापू यह अमीरों के घर में रहता है
क्या हुआ बाल मजदूर हूं मैं ?
मन मेरा भी खेलने पढ़ने को करे
जी बदनसीबी से लड़ने को करे
मिले सब तो पूछूँ उससे
ऐसी क्या भूल हुई मुझसे?
क्या है मेरा कसूर ?
क्यूं मैं हर खुशी से हूं दूर ?
हैं जो हम उम्र मेरे, उनकी सेवा करने को क्यूं मैं मजबूर ?
वे उठे सुबह स्कूल जाने के लिए
मैं उठूं उनका खाना बनाने के लिए
मैं क्या बदतर हूं जानवर से भी ?
जलता रहूं पेट की आग बुझाने के लिए
मेरी पहचान, मेरे वजूद की कीमत कुछ भी नहीं?
लिया जन्म बस मालिक के नाज उठाने के लिए
मिलती है पगार महीना खपने पर जो
छीन ले आए वह भी बापू
कभी मैखाने के लिए, कभी लाटरी पाने के लिए
उपदेश तो होते हैं बस जमाने के लिए।

क्या कुछ होता है हमारी दुनिया में

(सय्यद इद्रीस, सर्वेक्षक सहायक)

- अगर आप फुलों पर सो रहे है तो आपकी यह पहली रात है और अगर फूल आप पर सो रहे हों तो वह आपकी आखरी रात है।

- मोमबती जला कर मुर्दों को याद किया जाता है और मोमबत्ती बुझा कर जन्म दिन मनाया जाता है।

- फूलन देवी डाकू होकर भी चुनाव जीत गई और किरण बेदी पुलिसवाली होकर चुनाव हार गई।

- अजीब सी यह दुनिया है,... स्त्रियां एक दूसरे की शिकायत करते नहीं थकती और पुरूष दूसरे स्त्रियों की तारीफ करते नहीं थकते।

- पुराने जमाने में यदि कोई व्यक्ति अकेलेपन में हंसता था तो लोग कहते थे कि वह पागल हो गया , उसे भूत प्रेत का असर हो गया। आज के जमाने में यदि किसी व्यक्ति को अकेलेपन में हंसते हुए देख लिया तो लोग कहते हैं, "यार वह मैसेज हमें भी फारवार्ड कर दे ताकि हम भी उस हंसी का मजा लें"।

- जो नसीब में है वह चलकर आएगा। जो नहीं है वह आकर भी चला जाएगा। जिन्दगी को इतना दिल पर लेने की जरूरत नहीं है यारों, यहां से जिन्दा बचकर कोई नहीं जाएगा।

भोजन करने की विधि

(एन. बलराम स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक)

अनजाने में हो या समय के अभाव में हो या फिर घमंड में हो, पता नहीं हमारी भोजन करने की जो शैली है पूरी बदल गयी है। शास्त्रों में भी लिखा है, यदि भोजन शैली ठीक हो तो आपको बीमारियां भी नहीं होती। बीमारियों का जड़ भी हमारी भोजन शैली है। बचपन की याद आती है। बुजुर्ग जब बैठते थे तो खाने के पहले, पांच कौर बगल में रखकर, उस पर जल छिड़क कर, फिर बचे हुए अपने खाने के चारों तरफ जल प्रक्षालन कर, नमस्कार करते हुए, पहले पांच कौर घी में मिलाकर मंत्रजाप से लेते थे। फिर बाद में खाना खाते थे। बचपन में तो पता नहीं लगा कि यह क्या रिवाज है। हाथ – पैर धोकर सीधे परोसे खाने को लबालब खाके चलते बनों। यह क्या नौंटकी है बड़ो की। पर पूछने का साहस नहीं होता था कि मार पड़ेगी। थोड़ा बड़ा हुआ, दादी से पूछा ," आज जो ये पांच कौर अपने खाने से अलग रख कर करती क्या हो।" दादी ने बताया, बेटा यह मानव हमेशा पांच ऋणो में भरा रहता है।

1. देव ऋण
2. पितृ ऋण
3. ऋषि ऋण
4. मनुष्य ऋण
5. भूत ऋण

तो मैने पूछा, " वो कैसे ? दादी ने बोला," देव ऋण वो है जिसकी दुआ और रक्षा से हम जीवित है। पितृ ऋण वो है जिनकी वजह से हम सारे उनके सिखाए हुए धर्मविचार/परंपरा के पालन करने से आगे बढ़े रहे हैं। ऋषि ऋण वह है जिन्होंने हमें अपने धर्म का ज्ञान, रखरखाव और समर्पण सिखाया है।मनुष्य ऋण वह है जिस समाज में हम जीते हैं, मनुष्य ही अच्छे बुरे का ज्ञान देता है एवं समाज में हमारी कीर्ति मनुष्य के कारण बनता है । भूत ऋण या प्रेत ऋण जो निस्वार्थ सेवा प्रदान करते रहते है।मैनें पूछा " इन पांचों को तो पहले हमें भोजन करा दिया फिर आप हाथ में थोड़ा जल लेकर खाने के चारों ओर डाल रही हो। क्यों? " दादी ने कहा, "तू अभी बच्चा है । तुझे इन सबसे क्या लेना देना ? मैं जब जिद करने लगा तो उन्होंने बताया, "बेटा। तुम जब थोड़े बड़े हो जाओगे तब मैं बताऊंगी। तुम्हें मैं बस एक ही बात तेरे भले के लिए कहती हूँ। तुम स्कूल के कारण या खेल- कूद की वजह से मैल लेकर घर में घुसते हो। सीधे गुसलखाने जाओ। अच्छे से हाथ-पैर मुह धो। कपड़े बदलो। फिर पढ़ने बैठो। खाने से पहले भी हाथ- पैर धो। फिर दो चमच्च पानी से गला भिगाओ। फिर खाना।इसके बाद क्रमानुसार खाने के बाद हाथ, पैर धोना। इससे तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहेगा।" बस वैसे ही कुछ दिन निकल गए। सब मिलकर किसी जानने वाले रिश्तेदार के घर गए। उनके घर ग्रामोफोन था।

दादी के लिए उन्होंने भगवत गीता का रिकार्ड लगाया। हम बच्चों के सिवा सारे बड़े उसका आनन्द ले रहे थे। हम सारे बच्चे खेलने में व्यस्त हो गए। अचानक दादी ने मुझे बुलाया और श्लोक सुनने को कहा। तब मैं 14 वर्ष का था।

" ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविः ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम
ब्रह्मैव तेन गंतव्यम, ब्रह्म कर्म समाधिना "

इस शलोक का अर्थ भी समझाया जा रहा था। पर मेरा ध्यान तो खेल की तरफ था। दादी ने पूछा "क्यों रे। समझा में आया कि नहीं। मैने कहा," मुझे समझ में नहीं आया। बाद में समझा देना। तुम बाकी श्लोको को सुनकर आंनदित हो। मैं घर जाकर पूछ लेता हूँ। अभी मुझे खेलने दो।" और मैं खेलने चला गया।

रात हो रही थी। घर को जाना था। घर जाकर तभी मां के द्वारा बनाया खाना खाकर सोने बिस्तर पर लेट गया। तभी दादी ने पूछा,"क्यों रे, खाना खा लिया ? मैंने कहाँ "हाँ। " दादी ने पूछा क्यों खाया ? मैंने कहा "क्यों ? भूख लगी थी। तभी तो खाया ।" दादी ने पूछा, " भूख क्यों लगी थी ? मैं चिढ़ गया और पूछा "क्यों ? नहीं खाना चाहिए था क्या ? मेरे खाने से तुम्हें कम पड़ गया क्या ? " दादी ने हंसकर जवाब दिया, "नहीं रे पगले। ऐसा नहीं है। तुमने कहीं किसी जगह हवन करते देखा है ?" मैने हां कहते हुए सिर हिलाया। दादी ने कहा ," हवन कुंड में अग्नि प्रज्जलित की जाती है। अग्नि में घी डाला जाता है। करछुल से जब तक हवन संस्कार पूर्ण नहीं हो जाता। पूर्ण होने के बाद पूर्ण आहुति दी जाती है। हमारा भोजन प्रक्रिया भी वही है। हमारा पेट हवन कुंड है। पेट में जो हाइड्रोक्लोरिक अम्ल (Hydrochloric Acid) है वह अग्नि का स्त्रोत है। भूमी अग्नि है। हम खाना जो खाते हैं वही यज्ञ की घी(हविश) है। तुम्हारे हाथ करछुल है जिससे तुम खाना थाली से निकालकर मुंह में डाल रहे थे। तुमने तब तक खाना खाया जब तक तुम्हारे पेट ने तुम्हें नकारा नहीं। जब पेट ने नकारा तुमने पानी पी, हाथ- पैर धोए और उठ गए। शाम को कृष्णा अंकल के घर जो श्लोक के बारे में मैं चर्चा करना चाहती थी, वही था। तुमने तुम्हारी अन्तरात्मा को जो ब्रह्म है शान्त करने के लिए भी हवन किया। हवन कुंड रूपी तुम्हारे पेट में भूख की अग्नि के मुंह में हविश डाला तुम्हारे हाथों से। तुम्हारा पेट भी ब्रह्म है।तुम्हारे पेट में भूख की अग्नि ब्रह्म है। खाने को मुंह तक पहुंचाने वाला हाथ भी ब्रह्म है। तुम्हारा गंतव्य यानि मकसद जो भूख मिटाकर अंतरात्मा को खुश करना भी ब्रह्म है। इस ब्रह्म कर्म में तुम्हारा एक ही लक्ष्य है। ब्रह्म कर्म करते हुए तुम्हारे ब्रह्म को पाना। यानि अंतरात्मा में खुद को समर्पण करना। उपरोक्त श्लोक का मतलब यही है अब तुम्हारे बच्चों की भाषा में। जब तुम बड़े हो जाओगे, ब्रह्म ज्ञान के बारे में तुम्हारी बुद्धि के विकास के साथ-साथ अच्छे विश्लेषण कर सकोगे। चलो अभी सो जाओ।" दादी ने जो उदाहरण से समझाया था, उसके बाद तो मैं उस विषय पर आगे कभी उनसे चर्चा नहीं किया । कई साल गुजर गए। गणित में स्नातक भी मैने कर लिया था। स्नाकोत्तर में प्रवेश से पहले घर पर मौजूद भगवत गीता का पूर्ण पाठ पढ़ा। उपरोक्त श्लोक का भावार्थ कुछ और विश्लेषण किया। ब्रह्मार्पणं यानि ब्रह्म को अर्पण के लिए

उपयोग में हविःयानि घी जो ब्रह्म है, ब्रह्माणा यानि ब्रह्म द्वारा, हुतम यानि अर्पण, तेन यानि उसके द्वारा, ब्रह्मकर्म यानि ब्रह्मकार्य, समाधिना यानि लीन को, ब्रह्मैव यानि सिर्फ ब्रह्म ही, गंतव्य यानि लक्ष्य ।अर्थात् यज्ञ कुंड ब्रह्म है। प्रज्जवलित अग्नि भी ब्रह्म है। हवन सामग्री भी ब्रह्म ही है। जो हवन कर रहा है वह भी ब्रह्म है। हवन में इस्तेमाल हविश हेतु करछुल भी ब्रह्म है। ब्रह्मकार्य में ब्रह्म रूपी अग्नि को आहुती देने का ब्रह्म प्राप्ति हेतु किया गया सम्पूर्ण कार्य ही ब्रह्म है।

जिनको इस बात का ज्ञान है वे इसी श्लोक को पढ़ते हुए खाना खाते है। खाने से पहले पाँच कौर को जैसे देव ऋण,पितृ ऋण,ऋषि ऋण, मनुष्य ऋण,भूत(प्रेत) ऋण आदि हेतु अलग किया जाता हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् , भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ||

का मंत्र पढ़ते हुए खाने पर जल छिड़कें। फिर संपूर्ण खाने के चारों ओर थोड़ा पानी हाथ में लेकर दक्षिणावर्ती (clockwise) वृत में घुमाकर गायत्री मंत्र का पाठ किया जाता है।

सत्यं त्वरतेन परिषिचामी (दिन में हो तो)
ऋतं त्वा सत्यम परिषिचामी (रात में हो तो)

और घी के साथ प्रथम पाँच कौर अंगुठा, मध्यमा एवं अनामिका की उंगलियों के (गोमुख आकार में)साथ होठों को छुए. बंगैर निम्नलिखित मंत्रो से मुंह में डाला जाता है।

ॐ प्राणाय स्वाहा	- मेरी श्वास के लिए
ॐ अपनाय स्वाहा	- मेरी निश्वास के लिए
ॐ व्यानाय स्वाहा	- घूर्णन के लिए (मुंह एवं पेट में)
ॐ उदानाय स्वाहा	- पीत प्रक्रिया के लिए
ॐ समानाय स्वाहा	- पाचन के लिए

उसके बाद

अंह वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनाम देहमाश्रिता
प्राणापान समायुक्ता: पचाम्यान्नम चतुर्विधम

का मंत्र पढ़ते हुए पूर्ण निम्न चार प्रक्रियाओं में भोजन किया जाता है।

दान्तो से चबाकर - चावल, सब्जी, रोटी आदि

पीकर	-	दूध, पानी, छाछ आदि
चाटकर	-	शहद, रस, चटनी , आचार आदि
चूसकर	-	गन्ना, आम आदि ।

अर्थात् खाद्य पदार्थों में जीवन की अग्नि होकर अपने श्वास निश्वास प्रक्रिया से उन खाद्य पदाथों को पचा रहा हूँ । खाने के बाद भी मुंह, हाथ और पैर जरूर धोएं ।

उपरोक्त बताया गया विधान ही कई युगों से चली आ रही खाने का विधान है । परन्तु वास्तव में यह आधुनिक जिन्दगी समय के अभाव में ऐसा न करने को मजबूर कर रही है । अच्छा होगा हमेशा न सही पर फुर्सत में ही सही ऐसी ही विधान से खाना खाएं, स्वस्थ रहें ।

हिन्दू धर्मचक्र के कुछ नियम

(टी. कृष्ण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक)

क. निम्नलिखित तीन समयों में कोई निर्णय ना लें ……..

1. जोर से भूख लगने पर।
2. गहरी नींद से बीच में जागने पर।
3. मद्यपान करने पर (यानि दारू के नशे में)।

ख. निम्नलिखित तीन समयों में कोई वादा ना करें……..

1. अधिक खुश होने पर।
2. अधिक दुःख में होने पर।
3. अधिक गुस्से में होने पर।

ग. निम्नलिखित को कभी न भूलें ……..

1. आपदा में हमारे मददगार को ।
2. हमारी कमियों को अतिंरजित (magnifying)कर न देखने वालों को ।
3. हमेशा हमारी भलाई चाहने वालों को।

घ. निम्नलिखित को कभी अपने पास भटकने न दें ……..

1. हमें अहमियत न देने वालों को।
2. हमसे ईर्ष्या करने वालों को।
3. हमें समझे बगैर, हमारे बारे में औरों के पास गलत तरीके से पेश करने वालों को।

दृढ संकल्प

(वी. सुरेश, पटल चित्रक ग्रेड - IV)

काल के चक्र में फँस गया है देश हमारा,
दृढ़ता से देना होगा इसको सहारा,
अब की बार नहीं है खतरा पड़ौसी ताकत से,
हमें डर है कुछ भटके हुए नौजवानों की हिमाकत से ।
इनके दुस्साहस ने कर दिया हमें पस्त,
लगता है जैसे इंसानियत का सूरज हुआ अस्त ।
हर तरफ, हिंसा की आँधी है ,
नहीं दिखता हमें कहीं गाँधी है ।
केसरिया, सफेद और हरा रंग तिरंगा की शान है,
खून के छींटे पड़े इस पर हमारा अपमान है ।
हरी भरी थी धरा और नील अम्बर,
आज ओढ़े हैं खून की चादर ।
याद करो ये धरती है नानक, गौतम की,
पर आज सबके लिए घड़ी है मातम की ।
भारत की एकता और अखंडता को देगा जो चुनौती,
बचेगा नहीं सुनाने को आप बीती ।
आओ लें दृढ़ संकल्प, हम मिटा दें इस आतंकवाद को,
भ्रष्टाचार की लानत को, कुप्रथाओं, भुखमरी व गरीबी को,
तभी तो एक बार फिर राम की विजय रावण पर होगी,
दशहरा व दीवाली की धूम होगी ।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग का विकास एवं प्रगति

(ओबुलेश, मानचित्रकार)

भारतीय सर्वेक्षण विभाग अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कड़ी मेहनत तथा लगन और परम्परा से इतनी लम्बी सफर तैयार किया और अपने सदस्यों द्वारा बड़े प्रेम से डिपार्टमेंट नाम से पुकारा जाता है। यह संस्थान हमारे देश की एक पुरानी एवं राष्ट्रीय सर्वेक्षण संस्था है और पहले शिक्षा मंत्रालय के अधीन था तथा भारत सरकार का यह सब से पुराना वैज्ञानिक विभाग है जो आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिक मंत्रालय के अधीन है। इस की नींव 1767 में लार्ड क्लाइव द्वारा रखी गई थी। अब यह जल्दी अपनी 250 शताब्दी समारोह मनाने वाला है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारत में सारे ज्योडीय एवं स्थालाकृतिक सर्वेक्षणों और नक्शों के लिए जिम्मेदार है। इनमें सरकारी जंगलों, छावनियां, शहरों आदि नक्शों का काम भी शमिल है। साथ ही भारत सरकार द्वारा अधिकार दिए जाने पर इसमें विशेष सर्वेक्षणों के लिए भी जिम्मेदार है, जैसे अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं, औद्योगिक परियोजनाओं आदि से संबंधित सर्वेक्षण का काम भी शामिल है।

अपने विभाग के अधिकारी और कर्मचारी उन जगहों पर काम करते है जहाँ पहले कोई नहीं गया होता है। इस के बाद अन्य लोग वहाँ पर विकास का कार्य करते है। अपने अधिकारी और कर्मचारी को घने से घने जंगलों, तपती रेगिस्तान, दल दलों, देश के निचले से निचले समुद्री किनारों, ॐचे से ॐचे वर्फीले पहाड़ों एवं गहरे वादियों में जाना पड़ता है। वहाँ जा कर निंरतर पूरा मन लगा कर खूब मेहनत कर के नक्शा तैयार करते है। जो कि देश के विकास, रक्षा और शासन के लिए बहुत जरूरी होता है। देश के हर एक कोने में जनता के साथ सम्पर्क बनाए रखते है। वे कन्याकुमारी से लेकर हिमाचल (कश्मीर) तक अपने आदर्श वाक्य "आ सेतु हिमाचलम " का अनुसरण करते है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग की सब से पहले सन् 1767 में लार्ड क्लाइव द्वारा नींव रखी गई। लार्ड क्लाइव ने अपने मित्र एक इतिहासकार राबर्ट ओमेक के अनुरोध पर बंगाल का एक बड़ा नक्शा बनवाया जो मेजर जेम्स रनल ने बनाया। मेजर के काम से खुश होकर लार्ड क्लाइव ने उसे ईस्ट इंडिया कम्पनी के स्थालाकृतिक सर्वेक्षण के लिए बंगाल का महासर्वेक्षक बना दिया। यह रोचकपूर्ण प्रसंग है कि एक सैनिक मित्र से किसी इतिहासकार ने व्यक्तिगत अुनरोध के परिणाम स्वरूप अन्त में इतनी बड़ी सर्वेक्षण संस्था बन गई।

इस के बाद मद्रास में 1796 में और मुंबई में 1810 में प्रेसिडेंसीयो के लिए भी सर्वेक्षण विभाग बनाए गए। बाद में 1815 में ये तीनों विभाग एक में मिला दिए गए और इसे कर्नल मैकेंजी की देख रेख में रखा गया जो 01-05-1815 को भारत के पहला सर्वेपर जनरल (भारत का महासर्वेक्षक) के पद नियुक्त किए गए। तब से भारतीय सर्वेक्षण विभाग का काम बढ़ता ही चला गया है।

सन 1802 में वैज्ञानिक सर्वेक्षण के लिए आधारित नियंत्रण तैयार करते के लिए देश में महा त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण शुरू किया गया। विभाग की सब से बड़ी सफलताओं में से एक महा त्रिकोणमितीय सर्वेक्षण का काम है जिससे देश भर में ठीक ठीक ज्योडीय नियंत्रण की रूप रेखा प्राप्त हो गई और बहुत मूल्यवान साबित हुई।

भारत में वैज्ञानिक सर्वेक्षण की सुगणित सुरक्षित बुनियाद को भली प्रकार से रखने के लिए मेजर जेम्स रैनल और कर्नल विलियम लैम्बटन के महान नाम भारतीय सर्वेक्षण विभाग के संस्थापक महापुरूषों के रूप में हमेशा कृतज्ञतापूर्वक याद किए जायेंगे। कृतज्ञता के भाव स्वरूप इन दो महान सर्वेक्षकों के नाम हमारे विभाग के सुन्दर और समुचित ढंग से चित्रित किरीट पर भी विराजमान है। इस विभाग को एक और उल्लेखनीय सफलता मिली है जो दुनिया की सब से ॐची पर्वत चोटी की जानकारी तथा उसकी ॐचाई सुनिश्चित किया है। इस चोटी का नाम हमारा मशहूर सर्वेयर जनरल सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर रखा गया है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग की भू-संतुलन के सुप्रसिद्ध सिध्दान्त का भी एक बडी भारी देन है। इस सिध्दान्त को हमारे विभाग के अधिकारियों की विशिष्ट देन है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग वास्तव में भारत सरकार की बडी संस्थाओं में से एक है जो कि विकासशील देशों की जरूरी, विभिन्न प्रकार की तथा बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए हर समय तैयार रहता है और अपना कर्त्तव्य निभाता है।

कम परिचित और अपरिचित इलाकों की जानकारी प्राप्त करने के लिए विभाग को उल्लेखनीय सफलता मिली है। इस क्षेत्र में औरों के साथ साथ पंडित नैनसिंह और पंडित किशन सिंह के नाम महत्वपवूर्ण हैं। इस विभाग का परिचय कितना ही संक्षिप्त क्यों न हो तब तक अपूर्ण है। जब तक कर्नल आर.एच. फिलिमोर के महान नाम के बारे में कुछ ना कहा जाए। सर्वेक्षण इतिहासकार के रूप में उन्होंने प्रसिद्ध सर्वैक्षकों की मंडली की चार चाँद लगा दिए। " हिस्टोरिकल रिकार्डस आफ दी सर्वे आफ इन्डिया" नामक ग्रन्थ पाँच बड़े खण्ड सूचना के समूह भंडार को विभाग से बचाने और आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए विभाग के महत्वपूर्ण वर्षों की याद को हमेशा के लिए सुरक्षित रूप से एकत्र करने उनके महान प्रयत्न, उन के बढ़ती हुई लगन बहुत बडी गति बारी की व्यक्तित्व पूर्णता को स्पष्ट रूप से बतलाते हैं ।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग कितना फायदेमन्द है। उस के काम के जरूरत कितनी बढ़ गई इस के काम की प्रंशासा की की जा रही है और आने वाले साल में विभाग का और अधिक विस्तार करना जरूरी हो सकता है। इस की सेवाओं की माँग अन्य विकासशील देशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। लगातार बढ़ते क्षेत्र में देश विदेशों में विशिष्ट और महान सर्वेक्षण संगठन के रूप में अद्वितीय स्थान बना लिया है जो कि हमेशा आगे बढ़ रहा है। विज्ञान, सुरक्षा और विकास के क्षेत्र में अपनी देन जारी रखा है।

भातीय सर्वेक्षण विभाग के अधिकारी और कर्मचारी इस बात पर यथार्थ रूप से गर्व कर सकते है कि वे उस पुरानी और महान संस्था से संबंध रखते है । जिस को एक श्रेष्ट समृद्ध और अमूल्य विरासत मिली है जो उन्हें कीर्ति सम्मान और सफलताओं के ॐचे स्तर की ओर बढ़ने की प्रेरणा दे रही है तथा उनका यथा प्रदर्शन कर रही है।

किसी परियोजनाओं के विषय में कार्य करने से पहले भारतीय सर्वेक्षण विभाग से ही सब से पहले सलाह लेनी पड़ती है ताकि सड़कों, बांधों, बिजली, भारतीय रेल, तेल परिष्करण शाला, खांन संबधी उद्योगों का निर्माण के लिए हमारा मानचित्रों की आवश्यकता है और भारत सरकार द्वारा हमारे मानचित्रों को ही मान्यता दिया गया है। इसलिए उद्योगों के निर्माण में हमारा योगदान कार्य सिद्ध होगा।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, वैज्ञानिक एवं व्यवसायिक सेवा क्षेत्र में अभूतपूर्व संख्या, बढ़ता सर्वेक्षण, उच्च विश्वसनीयता का प्रमाण है । श्रेष्ठ सर्वेक्षण प्रदान करने की हमारी प्रामाणिकता 250 वर्षों की लम्बी यशस्वी प्रवृति रिकार्ड से उत्पन्न हुई है । वर्तमान दृश्य विधान में अंकीय फोटोग्रामिती, सुदूर संवेदन , ग्लोबल पोसिशनिंग सिस्टम, अंकिय मानचित्रण एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली जैसे आधुनिक तकनीकी की उन्नती से संबंधित क्षेत्रों में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं व्यवसायिको को विश्वस्त ज्ञान एवं साधारण व्यवहार प्रवृत होने के लिए उचित सिद्ध हो गई है । भारतीय सर्वेक्षण विभाग " महान वृत्तांश (Great Arc) " की द्विशती मना चुकी है जिसने उपमहाद्वीपों में यथार्थ सर्वेक्षण एवं मानचित्र की नींव डाली है। अपने प्रयासों के माध्यम से सामान्य रूप से देशवासियों एवं मुख्य रूप से विद्यार्थियों में सर्वेक्षण एवं मानचित्रण के बारे में वैज्ञानिक जानकारी, प्लानिंग भूस्थानिक प्रेषण की आदत डालने के उद्देश्य से इस ओर प्रोत्साहित करने में लक्ष्यबद्ध है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग में एक मुख्य कार्यालय जो सर्वेक्षण प्रशिक्षण संस्थान वर्तमान में भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान के नाम से माना जाता है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षणार्थ 6 मई 1967 को सर्वेक्षण एवं कार्टोग्राफी के क्षेत्र में स्थापित भारतीय सर्वक्षण विभाग ने प्रतिष्ठित प्रशिक्षण संस्थान के रूप में मान्यता प्राप्त की है। हमारे अधिकारियों के साथ- साथ अन्य सरकारी संगठनों, निजी व्यक्तियों, पड़ोसी देशों के सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। अपने प्रवीणता के आवश्यकता के अनुसार संकायों की सहायता प्रदान कर रहे है। इस के अतिरिक्त, प्रशिक्षण संस्थान अन्य स्तोत्र यानि मुख्य रूप से सुदूर संवेदन एवं प्रबंधन के क्षेत्र के निपुणो की सहायता संकाय आधार के भी ले रही है। निरन्तर संरचना को उन्नतशील बनाने के प्रयास एंव स्टेट ऑफ-द-आर्ट तकनीकी अनुपयुक्त के अनुकूल बनाने हेतु प्रशिक्षण संस्थान, सर्वेक्षण शिक्षण के प्रचार में उच्च कोटि स्तरों को प्राप्त करने की ओर प्रतिबद्ध है।

अब भारतीय सर्वेक्षण विभाग के विकास में मानचित्र बिक्रय कार्यालय की भूमिका भी एक है जो भारत के हर एक राज्यों में एक-एक मानचित्रण विक्रय कार्यालय स्थापित किया गया है जिसमें विभाग द्वारा तैयार किए गए मानचित्रण जैसे स्थालाकृतिक और भौगोलिक मानचित्र जो विभिन्न पैमानों पर स्कूल विद्यार्थियों के लिए स्कूल एटलस और राजनैतिक मानचित्र जैसे जिला, राज्य, देश आदि भारतीय सड़क मान चित्र, भारतीय रेल मान चित्र आदि की विक्रय होती है।

मानचित्रों द्वारा औद्योगिक, सड़क, रेल, सिंचाई परियोजना, कारखाना आदि प्रारम्भ करने में काफी सहायता मिलती है जो बढ़ती हुई मान संसाधन विकास में सरकारी, सार्वजानिक संस्थाओं के विकासशील कार्यकलापों के लिए भी लाभ सिद्ध हुई है।

मान चित्र के साथ – साथ अंकीय मानचित्र जैसे ओ.एस.एम, डी. एस.एम तथा संबंधित डिजिटल डाटा, आदि आवश्कता के अनुसार बिक्रि किया जाता है जो भारत के विकास एवं प्रगति के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

यह लेख विभिन्न पत्रिकाओं और विभागिय जानकारी के आधार पर है।

भारतीय 250 सालों का भारतीय सर्वेक्षण विभाग

(के.वी. रमण मूर्ती, अधिकारी सर्वेक्षक)

सन् 1767 में भारतीय सर्वेक्षण विभाग का आविर्भाव हुआ था एवं इस साल हमारे विभाग के 250 साल पूरे होने जा रहे हैं। इस उपलक्ष्य में देश भर में हमारे भारतीय सर्वेक्षण विभाग की विभिन्न कार्यालयों में हम सभी बड़े उत्साह से अलग-अलग कार्यक्रम करने जा रहे हैं।

हम सब जानते हैं कि पूरे संसार में 250 सालों में विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में काफी बदलाव हुआ है। हमारा विभाग भी आधुनिक तकनीक को अपनाकर देश की सेवा में निरंतर आगे बढ़ रहा है। मुख्य रूप से हमारे विभाग को पूरे भारत देश का विभिन्न पैमानों पर सर्वेक्षण एवं मानचित्रण का कार्य करने का दायित्व प्राप्त है। हमारे विभाग के मानचित्रों ने देश की प्रगति / उन्नति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वतंत्र होने से पहले, भारत देश का यह कार्य एक इंच समान एक मील के पैमाने पर पूरे राष्ट्र का सर्वेक्षण कार्य किया गया था। इस कार्य की शुरूआत ब्रिटिश शासन काल में हुई थी। उस जमाने में पूरे देश में त्रिभुजन (Triangulation) पद्धति द्वारा नियंत्रण बिन्दु दिए जाते थे। इसका मूल आधार मद्रास (अबका चैन्ने) में था। यह आधार सैन्ट थॉमस चर्च के पास था जहाँ पर 40006.4 फीट का बेस माप नापा गया था, और इसके आधार पर पूरे देश में त्रिभुजन (Triangulation) पद्धति द्वारा आधार बिंदु (कंट्रोल पाईंटस) तैयार किए गए थे। देश के दक्षिण में स्थित कन्याकुमारी से लेकर उत्तर भारत में हिमालय के पास स्थित मसूरी तक एक चाप को नापा गया था एवं दूसरा चाप पश्चिम में स्थित कराची (अब पाकिस्तान में) से लेकर पूर्व में स्थित कोलकत्ता शहर तक त्रिभुजन पद्धति द्वारा नापा गया था। ये दोनों चाप मध्यभारत में स्थित कल्यानपूर के पास एक दूसरे से मिलते हैं। उस जमाने में मूल आधार बिन्दु त्रिभुजन , ट्रावर्स, तलेक्षण इत्यादि पद्धतियों से दिए गए एवं पूरे भारत का सर्वेक्षण कार्य पटल चित्रण अथवा पटल चित्रक पद्धति द्वारा किया गया था। जब से फोटोग्रमितीय पद्धति अपनाया गया, सर्वेक्षण कार्य काफी आसान हो गया पूरे देश का सर्वेक्षण 1:50,000 पैमाने पर पूर्ण हो गया एवं 1:25,000 पैमाने पर सर्वेक्षण पूर्ण होने पर है।

अब देश के विभिन्न विभागों को एवं देश के प्रगति के लिए ज्यादा से ज्यादा बड़ेपैमाने पर सर्वेक्षण एवं मानचित्रण की माँग को पूरा करने के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा कार्य आरंभ कर दिया गया है।

आज कल पूरे देश से जी.पी.एस सर्वेक्षण द्वारा मूल बिंदु दिए जा रह है। यह पद्धति एक उपग्रह पद्धति है और इस से दुनिया के किसी भी स्थान पर किसी भी समय नियंत्रण बिन्दु का स्थानांक प्राप्त किया जा सकता है। उस पद्धति से कंट्रोल पाईंट बनाने में एक क्रांतिकारी बदलाव आया है और सर्वेक्षण कार्य करना भी आसान हो गया है। हमारे भारत देश में गगन (GAGAN) अथवा जी पी एस पर आधारित जियो ऑग्मेंटेट नेविगेशन (GPS Aided Geo Augumented Navigation) पद्धति की शुरूआत हो गया है एवं इस उपग्रह पद्धति

द्वारा पूरे देश में नेविगेशन के लिए एवं कंट्रोल पाईंट सटीकता से प्राप्त करने के लिए उपयोग होगा। यह गगन सिस्टम में जी पी एस डाटा को प्राप्त कर 15 भारतीय रिफरेन्स स्टेशन जो अहम्मदाबाद, बैंगलुरू, भूवनिश्वर, कोलकता, नई दिल्ली, ड़िब्रुगढ़, गया, गोवा, गोवाहाटी, जैसल्मेर, जम्मू, नागपूर, पोरबंदर, पोर्टब्लैर, तिरूवनंतपुरम में स्थित है जहाँ प्रोसेसिंग किया जाता है एवं बैंगलुरू में स्थित भारतीय मास्टर कंट्रोल स्टेशन से जियो उपग्रहों से अपलिंक किया (uplink) जाता है और अंत में उपग्रहों से विभिन्न जी पी एस रिसीवरों की सहायता से कोई भी भारतीय ग्राहक डाटा को सटीकता से प्राप्त कर सकता है और इसको पूरे भारत देश में विभिन्न परियोजनाओं में भारत के विकास के लिए उपयोग किया जा सकता है। याद्रश्विका से हमारा भारतीय सर्वेक्षण विभाग इसी साल 250 सालों का साल गिरह पर्व बनाने जा रहे हैं और गगन उपग्रह पद्धति हमारे विभाग के लिए जो एक अहम भूमिका निभाएगी।

हमारी भारतीय सर्वेक्षण विभाग में विभिन्न पैमाने पर नक्शा बनाने के लिए फोटोग्रामिती एवं सुदूर संवेदन पद्धियों का भी उपयोग किया जाता है फिर अंकीय तलेक्षण यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। हमारे विभाग ने देश के विकास के लिए नक्शा बनाने के साथ – साथ देश में विभिन्न बहु प्रयोजनकारी परियोजनाओं का कार्य जैसे रेल- रोड़ सर्वेक्षण , जल, विद्युत परियोजनाएं,टनल सर्वेक्षण, तटीय सर्वेक्षण अंटार्कटिका में सर्वेक्षण इत्यादि कार्य भी करती है। अंटार्कटिका में मैत्री (Maitri) एवं भारती (Bharathi) अहं भूमिका निभाती है। इस साल 250 सालगिरह पर माऊंट एवरेस्ट, की ॐचाई दुबारा नापने एवं एवरेस्ट अभियान (Everest Expendition) से हिमालय में सर्वेक्षण कार्य के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग एक महत्वपूर्ण कार्य करने जा रही है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग का मुख्य उद्देश्य, देश की प्रगती है और इस समय हम सब को हाथ से हाथ मिलाकर चलना है और हमारे विभाग के ऊपर जो महत्वपूर्ण कार्य सरकार द्वारा सौंपेगये है उसे हमें जल्द से जल्द पूर्ण करना है ताकि दुनिया में भारत एक विकसित देश बने और इसी में सबकी भलाई है। अंत में सबको हमारे विभाग के 250 सालगिरह पर्व पर. शुभकामनाएं।

जय हिन्द .....
जय भारत.....
जय भारतीय सर्वेक्षण विभाग।

बहादुरी का पुरस्कार

(पाण्डव कुंटिया, सर्वेक्षक सहायक)

भारत गाँवों का देश है। अस्सी प्रतिशत लोग गाँवों में बसते हैं । वैसा ही एक गाँव 'तलाबुरू' है, जो झारखंड प्रांत में एक जंगल के बीच बसा है । झारखंड प्रांत में अधिकत्तर गाँव वन क्षेत्र में है , इसलिए इस वन प्रदेश को झारखंड प्रांत कहा जाता है । झार यानि जंगल- झाड़, खंड यानि भू- भाग ।

प्राचीन काल में इस क्षेत्र का नाम झारखंड था । चैतन्य महाप्रभु ने जगनाथ धाम, पुरी उड़िया राज्य से मगध बिहार राज्य जाते समय रास्ते में पांडव अपने शिष्यों के साथ गए थे । महाप्रभु ने यहाँ के लोगों का रहन-सहन देखकर बोले-

साल पत्रे भोजनम,
पायोल पत्रे पानम,
खजूर पत्रे शयानम,
झारखंडी विधियते ।

यानि यहाँ के लोग साल के पत्ते में भोजन करते हैं, मिट्टी – पत्थर के बने हुए पात्र में पीते हैं, खजूर के पत्ते को चटाई बना कर उसमें सोते हैं, यही इनकी पहचान है । महाप्रभु ने ही इस क्षेत्र को झारखंड नाम दिया ।

यह वही चैतन्य महाप्रभु है, जिन्होंने लोगों को कलियुग का महायंत्र का पाठ सिखाए । जैसे –

हरे राम हरे राम,
राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण,
कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

प्रति दिन इसका पाठ करने से इस संसार के भव सागर को पार कर जायेंगे ।

यह कहानी सत्य घटना पर आधरित है । इस 'तलाबुरू' गांव में बोस्की नाम की एक सात वर्षीय बालिका अपने विधवा माँ और तीन वर्ष का छोटा भाई टापू के साथ रहती थी ।बोस्की रोज की तरह बकरियाँ चरा रही थी । वह अक्सर अपना छोटा भाई टापू को साथ लेकर जाती । बकरियों को लेकर जंगल में जाती, उन्हें चरने के लिए छोड़ देती और पेड़ की छाया में बैठ जाती । हमेशा अपने साथ साड़ी का टुकड़ा रखती थी । उस साड़ी को झूला बना कर पेड़ पर बांध देती । उसमें अपने छोटे भाई को सुला देती । यह उसकी रोज की दिनचर्या थी ।

हर रोज की तरह हंसिया लेकर पेड़ पर चड़ गई, उससे पत्तियों को काटने लगी। सभी बकरियों पेड़ के नीचे आकर पत्तियाँ खाने लगी।बोस्की पत्तियाँ काटने के पश्चात पेड़ के नीचे उतरी। भाई के पास गई। भाई को पानी पिलाया और झूला झुलाने लगी।

तभी बोसकी ने देखा कि बकरियाँ अजीब सी आवाज में मैंह – मैंह कर इधर उधर भागने लगी हैं। यह देखकर बोस्की को जिज्ञासा हुई। आखिर बकरियाँ ऐसी क्यों कर रही हैं। इसलिए उसने हाथ में हंसिया ली।उसने देखा की चीते के मुँह में एक बकरी का बच्चा था। यह दृश्य देखकर पहली बार तो वह घबरा गई, फिर संभलकर चिल्लाई।

फिर तुरन्त पास पड़ा पत्थर उठाकर चीते को मारा। पत्थर चीते के मुँह में लगा और बकरी का बच्चा छुट गया। तभी चीते ने झूले में बच्चा को देख लिया था। चीता उसके ऊपर झपटा और बोस्की के छोटे भाई टापू को मुँह में ले लिया। पहले तो बोस्की घबरा गई, फिर चीते के ऊपर पूरे जोश के साथ कूदी। उसने साड़ी पकड़ ली और हंसिया से चीते के पेट में जोर से वार किया। चीते ने भी पंजा मारा। बोस्की को हल्का चोट आया। मगर साड़ी का पल्लू नहीं छोड़ा। चीता गुर्रा उठा, इस गुर्राहट में उसके मुँह से उसका छोटा भाई टापू छुट गया। फिर बोस्की चीते पर लपकी, चीता वहाँ से भाग गया।

इतने में आस – पास खेतों में काम कर रहे लोगों ने बोस्की को देख लिया था। लोग अपने-अपने हाथों में डंडा, थाली – कटोरी बजाते हुए चले आ रहे थे और जोर- जोर से आवाजें लगा रहे थे।गाँव वालों ने बोस्की और टापू को अस्पताल पहुँचाया।

बोस्की ने बड़ी बहादुरी से एक जंगली जानवर का सामना कर अपने छोटे भाई टापू को बचाया था। इसलिए उसे बहादूरी के लिए 26 जनवरी पर सरकार की ओर से पुरस्कृत किया गया। बोस्की के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार तो उसके भाई का जीवित बच जाना था।

गज़ल

(पेन्ड्याला श्रीनिवास, अधिकारी सर्वेक्षक)

बात कुछ इस तरह कही जाए,
वो गजल की तरह सुनी जाए।
बदगुमानी में ये भी मुमकीन है,
पल में बरसों की दोस्ती जाए।
कोई बुझवा दे उन चिरागों को,
जिनसे आँखों की रोशनी जाए।
गम न टलता है आखिरी दम तक
एक दो दिल में हर खुशी जाए।
कोई सूरत न उनसे मिलने की,
किस तरह दिल की बेकली जाए।
ऐसा एक हादसा गुजर जाता,
रूबरू उनके "श्रीनू" की जिंदगी जाए।